RUDRA
The Name of Destroyer
(Hindi Version)
HEM RAJ JAT
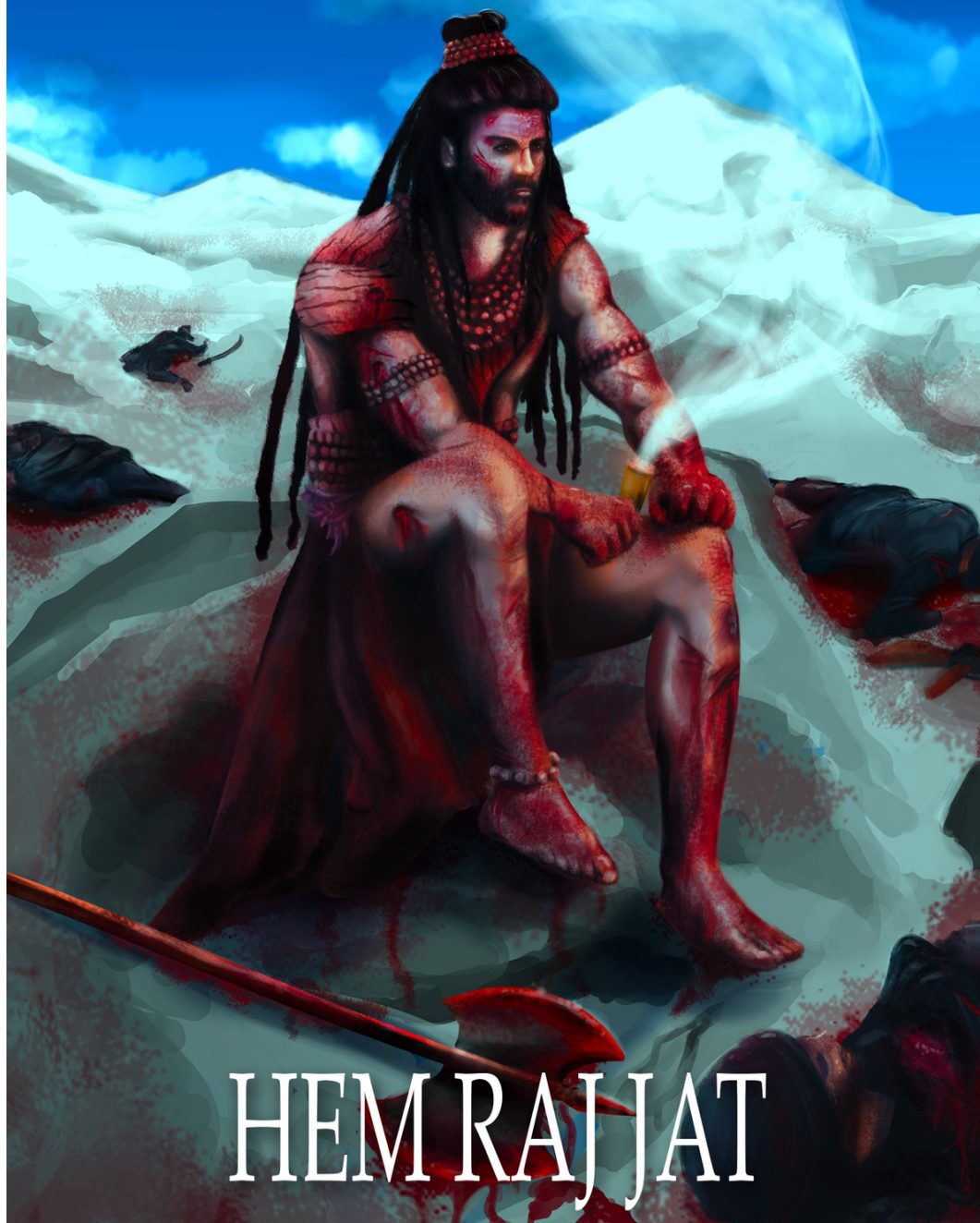
RUDRA
The Name of Destroyer
(Hindi Version)
HEM RAJ JAT

1.

The Wanted News

NIA Head-quarters-New Delhi, 2019

NIA Chief डॉ. कुलश्रेष्ठ, अफ़सर केविन, अफ़सर निखिला और उनके दूसरे तीन-चार असिस्टेंट लगभग दौड़ते हुए कंट्रोल रूम की तरफ जा रहे थे।

डॉक्टर कुलश्रेष्ठ, सैन्य खुफिया विभाग की प्रमुख लगभग साठ के दशक में अभी भी उनका चेहरा कठोर दक्षता और ऊर्जा विकीर्ण करता है। वह मजबूत, स्वतंत्र और शक्तिशाली है। उसने गुप्तचरों और गुप्त एजेंटों की पुरुष-प्रधान दुनिया में अपना करियर बनाने के लिए आगे बड़ी है। वह अपनी टीम के लिए एक देखभाल करने वाली मां के रूप में जानी जाती हैं, लेकिन अवसर आने पर, वह अपने एजेंटों को मरने भेजने से भी नहीं डरती हैं या भारत को सुरक्षित रखने के लिए बच्चों को मरने के लिए कहती हैं।

वह हमेशा अपने फैसले के साथ खड़ी रहती है और अपनी टीम को राजनीतिक बैकलैश से सुरक्षित रखती है। कभी-कभी, वह टीम और एजेंटों की मदद करने और वध को रोकने के लिए अपने रास्ते से हट जाती है। गुस्सा हमेशा उसके चेहरे पर होता है लेकिन आज वह थोड़ा चिंतित लग रही थी। गलियारे में तेजी से चलते हुए उसने केविन से पूछा-

"क्या तुम्हें पूरा यकीन है कि यह खबर सही भी हो सकती है ?" डॉक्टर ने पूछा।

"यस डॉक्टर, हमें इस इंफॉर्मेशन पर पूरा भरोसा है।" एजेंट केविन ने जवाब दिया।

"पर जो इंफॉर्मेशन तुम्हें पिछले 6 सालों में नहीं मिली वह अचानक कैसे मिल गई ?"

"हमें ऐसा लगता है कि दुर्घटना के समय जो Avalanche आया था, शायद हमारे जीपीएस डिवाइसेज और दूसरे सेंसर वहां बर्फ के ज्यादा नीचे दब जाने के कारण काम नहीं कर रहे थे। हो सकता है कि गर्मी से बर्फ पिगली होगी और हमारे सेंसर फिर से काम करने लगे हो।" एजेंट निखिला ने जवाब दिया।

"और तुम्हें यह भी लगता है कि वह भी उस Avalanche से बच गया होगा और वापस जिंदा होगा ?" डॉक्टर ने व्यंग्य से कहा।

"वो इतनी आसानी से नहीं मर सकता।" निखिला ने जवाब दिया।

असिस्टेंट ने कंट्रोल रूम का दरवाजा खोला और सभी ने कंट्रोल रूम में प्रवेश किया

डॉक्टर के नए कंट्रोल रूम में लगी बड़ी स्क्रीन की तरफ देखा और और वह एक ऑपरेटिंग असिस्टेंट के पास गई और बोली

"कौन सी जगह है यह ?"

“ चंद्र ताल झील, स्पीति घाटी के आसपास” एजेंट निखिला ने कहा।

“और तुम्हें क्या लगता है कि वह पिछले 6 साल से उसी झील में डुबकिया लगा रहा होगा” डॉक्टर ने कहा।

“हो सकता है कि वह बच निकला हो और”….

“Nonsense, वह कोई बच्चा नहीं था अगर चिंता होता तो लौट आता “ डॉक्टर ने एजेंट निखिला की बात को काटते हुए कहा।

“Dr. प्लीज, हमें एक मौका”..... एजेंट केविन की बात पूरी होने से पहले ही डॉक्टर कुलश्रेष्ठ ने गुस्से से केविन की तरफ तरफ देखा और कहा

“Stop this madness Kevin, यह जगह LAC के बहुत नजदीक है। चीन से हमारे हालात वैसे भी अच्छे नहीं हैं और तुम लोग चाहते हो कि हम वहां जाकर एक अवैध सर्च ऑपरेशन चलाएं,I’m sure goverment भी इसकी परमिशन नहीं देगी।”

डॉक्टर कुलश्रेष्ठ तेजी से पीछे मुड़ी और कंट्रोल रूम के बाहर जाने लगी । सभी लोग डॉक्टर कुलश्रेष्ठ पीछे जाने लगे।

“Dr. Please, प्लीज हम वहां कोई अवैध तरीके से नहीं जाएंगे और किसी को कोई प्रॉब्लम नहीं होगी।

“तुम शायद जानते नहीं कि हमने, इस देश ने उसके लिए कितनी बड़ी कीमत चुकाई है और मैं यह नहीं चाहती कि ऐसा फिर हो” । डॉक्टर कुलश्रेष्ठ ने गुस्से से कहा।

“यस डॉक्टर, हम यह जानते हैं और इसलिए हमें उसे किसी भी कीमत पर ढूंढना चाहिए और आप भी यही चाहते कि वह वापस लौट आए” । केविन ने भावुक होकर कहा।

"जानती हूं उसकी वापसी हमारे लिए बहुत जरूरी है, लेकिन यह सब अब सिर्फ बकवास है, I don't see any hope l" डॉक्टर ने कहा।

"डॉक्टर हमें इतनी जल्दी हार नहीं मान लेनी चाहिए। हमें एक आखरी कोशिश करनी चाहिए"। केविन ने भावुक होकर कहा।

"कोशिश तो हम पिछले 6 वर्षों से कर रहे हैं पर क्या हुआ, it was completely pointless"।

"Yes doctor, लेकिन इस बार हमारे पास जो जानकारी है वह काफी भरोसेमंद है हमें बस एक बार और कोशिश करने दीजिए"। केविन ने डॉक्टर कुलश्रेष्ठ के ऑफिस का

दरवाजा खोलते हुए कहा।

"लगता है तुम मुझे पसंद नहीं करते या फिर तुम मेरे आदेश को पसंद नहीं करते?"

"नहीं, ऐसा नहीं है डॉक्टर। Quite the opposite, in fact." केविन ने कहा।

"तो फिर तुम्हें क्या लगता है कि मैं हमेशा तुम लोगों का बुरा ही चाहती हूं?"डॉक्टर कुलश्रेष्ठ गुस्से में थी।

"हमें बस उसे ढूंढना चाहिए......"

'यदि तुमने एक भी शब्द और बोला तो मैं तुम्हें मार डालूंगी।"

"नहीं, आपको भरोसा करने की जरूरत है, एक आखिरी बार।" निखिला ने कहा।

"भरोसा? यह कैसे संभव है! आप लोगों ने पिछली घटना सीधे मंत्री को रिपोर्ट की है। आपने मुझसे पूछने की परवाह नहीं की, हम क्या करते हैं?" डॉक्टर कुलश्रेष्ठ ने गुस्से से कहा।

"हमें इसके लिए खेद है। यह एक तात्कालिकता थी और आप उस समय उपलब्ध नहीं थे। हमारे पास कोई विकल्प नहीं था।" केविन ने समझाया।

"अच्छा बहाना; लेकिन मुझे यह समझ में नहीं आता कि जो लोग सलाह नहीं लेते वे हमेशा इसे देने पर जोर देते हैं।" डॉक्टर कुलश्रेष्ठ ने कहा।

"मैं बस यही कहने की कोशिश कर रहा हूं ...।"

"यदि तुमने उसके बारे में फिर से कहने की हिम्मत की तो मैं तुम्हें इसी वक्त गोली मार दूंगी।" डॉक्टर कुलश्रेष्ठ उग्र थी।

"लेकिन वैसे भी वह आपका बेटा भी तो है ...!" केविन ने कहा।

"ओह अछा! तुम मुझे भावनात्मक रूप से ब्लैकमेल करने की कोशिश कर रहे हैं। अगर आप सोचते हैं कि यह मुझ पर काम करेगा तो आप गलत हैं। मैं हमेशा की तरह कठोर हूँ। आप अपनी मीठी और भावनात्मक बातों से मुझे नहीं झुका सकते।

"मुझे खेद है, लेकिन यह हमारा उद्देश्य नहीं है।" केविन ने कहा।

"डॉक्टर, यह केवल आपके बारे में नहीं है बल्कि वह हम में से हर एक से जुड़ा हुआ है। कृपया इसके बारे में सोचें और हमें उसके लिए जाने की अनुमति दें। " निखिला ने गीली आँखों से कहा।

डॉक्टर कुलश्रेष्ठ ने कुछ सेकंड के लिए निखिला के चेहरे की तरफ देखा और फिर आह भरते हुए, अपना चश्मा हटा दिया और फिर एक लंबी सांस भरी और कहा

" ठीक है, पर याद रहे यह आखरी कोशिश होगी इसके बाद यहां कोई भी उसका नाम तक नहीं लेगा।"

केविन के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कुराहट आई और धीमी आवाज में बोला-
“ Thank you Doctor! हम एक लंबी यात्रा पर जाना चाहते हैं।"
“Okay, remember this will be the last try." Doctor kulshreshth replied.
केविन और निखिला ने एक दूसरे की तरफ खुशी से देखा और ऑफिस से बाहर निकल गए।

2.

Search for The Missing

Chandratal Lake-Spiti Valley, 2019

सुबह की लगभग 3.00 बज रहे थे। अभी हर तरफ पूरी तरह से अंधेरा छाया हुआ था। हेलीकॉप्टर की पंखुड़ी की आवाज के अलावा और कोई आवाज नहीं थी। हेलीकॉप्टर की पंखुड़ियों की तेज गड़गड़ाहट में लगभग चिल्लाते हुए सर झुका कर केविन, निखिला वह दूसरे दो एजेंट्स ने NIA ऑफिस की छत पर खड़े हेलीकॉप्टर में प्रवेश किया।

निखिला ने अपनी कुर्सी की पेटी को बांधते हुए केविन से कहा "क्या हम स्पीति वैली हेलीकॉप्टर से ही पहुंचेंगे?"

"यह मौसम पर निर्भर करता है। अगर मौसम ठीक रहा तो हम वहां तक हेलीकॉप्टर से पहुंच जाएंगे और मौसम खराब रहा तो हमें चंडीगढ़ या मनाली में रुकना पड़ेगा।"

"क्या वहां अभी बर्फबारी हो रही होगी ?" निखिला ने पूछा।

"नहीं, इस समय वहां बर्फबारी नहीं होती है। मौसम ज्यादातर साफ रहता है, इसीलिए लोग पर्यटन के लिए वहां जाते हैं। पर ज्यादा खुश मत होना क्योंकि वहां पर अभी भी हड्डियां कड़काने वाली ठंड है।" केविन ने मुस्कुराते हुए कहा।

"ठंड को तो मैं देख लूंगी.... बस पहले शेखर मिल जाए!" निखिला ने हंसते हुए जवाब दिया।

केविन और दूसरे एजेंट भी हंस पड़े।

"क्या तुम्हें लगता है कि वाकई में इस भयानक ठंड में वो जिंदा भी होगा ?" निखिला ने अचानक अपने चेहरे पर गंभीर भाव लाते हुए कहा।

"निखिला...! शेखर को तुम जितना जानती हो वह उससे कहीं अधिक अनजाना हैं। शेखर इतनी आसानी से नहीं मर सकता। और वैसे भी उसे जिंदा मानने के सिवाय हमारे पास कोई और दूसरा रास्ता भी तो नहीं है। यही हमारा आखिरी सहारा है कि हम उसे जिंदा मानकर चलें। मुझे पूरा यकीन है की हम उसे जरूर ढूंढ लेंगे। और फिर सब कुछ पहले जैसा होगा।" केविन ने रुआंसे गले से कहा।

"हम उड़ान भरने के लिए तैयार है…! क्या आप सब भी…?" पायलट ने पीछे मुड़कर केविन और निखिला को हाथ उठाकर उड़ान भरने का इशारा करते हुए कहां।

"Yes, we are ready….!" उन दोनों के मुंह से एक साथ निकला।

पायलट ने छत पर खड़े असिस्टेंट को इशारा किया और हेलीकॉप्टर को हवा में उठाना शुरू कर दिया। थोड़ी ही देर में हेलीकॉप्टर में पूरी गति पकड़ ली और वह अपने गंतव्य की तरफ तेजी से बढ़ने लगे।

केविन और निखिला दोनों अच्छी तरह से जानते थे कि इस बार भी उन्हें उसके ढूंढ निकाल पाने की उम्मीदें बहुत कम थी। पिछले 6 सालों में उन्होंने इस प्रकार की कई कोशिशें की थी। पर हर बार उन्हें नाकामयाबी ही मिली थी। फिर भी वो दोनो अपने आप को मन ही मन में ढाढस बंधा रहे थे। पिछली इतनी नाकामयाबीयों के बावजूद भी वो हिम्मत हारने के लिए तैयार नहीं थे। वो उसकी कीमत जानते थे। उसके लिए वे सब कुछ दांव पर लगाने के लिए तैयार थे।

इस बार उन्हें उम्मीद की एक नई किरण मिली थी। इसलिए उनमें एक नया उत्साह था। एक नई उम्मीद थी। एक नई आशा थी। किसी को अपने दोस्त को ढूंढने की। किसी को अपने प्रेमी की। किसी को अपने बेटे की। या फिर सबके नायक को ढूंढने की…. पर जो भी हो उन्हें उम्मीद जरूर थी।

हेलीकॉप्टर को उड़ान भरे लगभग तीन घंटे बीत चुके थे। हेलीकॉप्टर अब हिमालय की छोटी-छोटी पहाड़ियों के ऊपर से उड़ान भर रहा था। यहां वहां बिखरे बादलों को चीरते हुए तेज गति से स्पीति घाटी की तरफ बढ़ रहा था। पायलट ने मुड़ कर केविन और निखिला को देखा। वे अब अपनी कुर्सियों पर नींद में ऊंग रहे थे। हेलीकॉप्टर की खिड़कियों से छन कर आ रही सूरज की रोशनी उन्हें पूरी तरह से सोने नहीं दे रही थी।

पायलट ने पीछे की कुर्सी पर बैठे एजेंट अनिरुद्ध को उन्हें जगाने का इशारा किया। एजेंट अनिरुद्ध ने केविन के कंधे पर हाथ रखा और उसे हिला कर नींद से जगाया। केविन ने जागते ही तुरंत निखिला को भी नींद से जगाया।

निखिला ने नींद से बाहर निकलते ही कहा "क्या हम पहुंच गए?"

"हां…. लगभग पहुंच गए हैं ! बस कुछ और पलों का रास्ता बाकी है। तब तक के लिए तुम बाहर के खूबसूरत नजारे देख सकते हो।" पायलट ने कहा।

निखिला ने आंखों को अपने हाथों से मलकर साफ किया और कांच की खिड़की से बाहर की तरफ झांकने लगी। वह हिमालय पर शायद पहली बार आई थी। इसलिए वहां सब कुछ उसके लिए नया था। जहां तक उसकी नजर पहुंचती वहां तक हर तरफ सफेद

बर्फ की चादर ओढ़े हुए विशाल पहाड़ों के सिवाय कुछ नहीं दिखाई पड़ता। कहीं-कहीं छिटपुट बहते छोटे-छोटे पहाड़ी नाले भी दिखाई पड़ रहे थे।

उसने अभी तक सिर्फ किताबों और ग्रंथों में ही हिमालय की हमेशा बर्फ से आच्छादित रहने वाली चोटियों व श्रेणियों के बारे में पढ़ा था। कश्मीर से लेकर बर्मा तक विस्तृत इस विशाल गिरी श्रृंखला के बारे में सिर्फ अभी तक पढ़ा तथा सुना था। उसे ज्ञात था कि हिमालय के भौगोलिक व प्राकृतिक रूप को निखारने में यहां की असंख्य पर्वत श्रेणियां, नदियों, सरोवरों, वन संपदा, खनिज संपदा आदि का अतुलनीय महत्व है। यहां का हर पर्वत, चोटी, शिखर, श्रेणी, पहाड़ी, तालाब, झरना, वन, सरोवर व नदी किसी न किसी तरह से पौराणिक घटना के साक्षी हैं। वह मन ही मन इन सब को प्रणाम कर रही थी और साथ ही प्रार्थना भी।

अभी तक हेलीकॉप्टर नीचे स्पीति घाटी में उतर चुका था पर निखिला अभी भी हिमालय के सम्मोहन में डूबी हुई थी। केविन ने कुछ पल इंतजार करने के बाद निखिला के सामने हाथों से चुटकी बजाकर उसकी तंद्रा तोड़ी और वर्तमान काल में लाया।

"चलो हम पहुंच गए हैं। तुम ये नजारे बाहर चल कर भी देख सकती हो।" केविन ने अपनी कुर्सी से उठते हुए कहा।

"हां…. हां….!" निखिला ने हड़बड़ा कर जवाब दिया और अपनी कुर्सी की पेटी खोलने लगी।

उनका हेलीकॉप्टर उस विशाल स्पीति घाटी में पवित्र झील चंद्रताल के नजदीक उतरा। हेलीकॉप्टर से एक-एक कर के वे बाहर निकले और सब उस सुंदर झील को चुपचाप ऐसे देखने लगे मानो उस झील ने उन्हें अर्धचेतनावस्था में ला कर बांध दिया हो। आखिर वो सम्मोहित होंगे ही क्योंकि उनके सामने संपूर्ण प्रकृति का वैभव बिखरा पड़ा था।

अभी सूर्योदय हो रहा था इस कारण इस झील का दृश्य अत्यंत ही मनोहारी था। बादलों से छनकर जब सूर्य की किरणें झील पर गिर रही तो उस झील का पानी सोने सा चमकता हुआ प्रतीत हो रहा था। झील के पीछे बर्फ से आच्छादित शिखर ताम्र रंग से चमचमाते दिख रहे थे। सूर्य की किरणें बादलों व आकाश में रंगों की छटा बिखेर रही थी।

उनकी तंद्रा तब टूटी जब उनके कानों में किसी की तिब्बती भाषा में आवाज गूंजी….

"ताशी दिले…!"

"पेपागसहयो….! खे रांग दे पो यिन नम….!

उनके सामने नमस्ते की मुद्रा में हाथ जोड़े, एक मझले कद का हट्टा कट्टा युवा खड़ा था। छोटी व गोल आंखें, चपटी नाक, चमकदार चमड़ी वाला गेहुआ पीले रंग का वह युवक मुस्कुराता हुआ उनका अपनी भाषा में अभिवादन कर रहा था।

निखिला ने आश्चर्य से आंखें फाड़कर केविन की तरफ देखा और कहां "क्या बोल रहा है यह? कौन है यह?"

केविन के चेहरे पर एक बड़ी मुस्कुराहट आ गई। केविन ने आगे बढ़कर उस युवक के सामने नमस्ते की मुद्रा में हाथ जोड़े और कहा "लोनेपो गांपो…..!"

"क्या….? क्या गांपो...?" निखिला ने असमंजस से पूछा।

केविन ने पीछे मुड़कर निखिला को देखा और हंसकर कहा "लोनेपो गांपो ! हमारे नेटवर्क का हिस्सा और यहां हमारा मार्गदर्शक।"

"वाकई में... ? पर ये कौन सी भाषा बोल रहा है?" निखिला ने और ज्यादा असमंजस से पूछा।

"यह तिब्बती बोल रहा है। इसकी अपनी मातृभाषा। इस क्षेत्र में ज्यादातर लोग यही बोलते हैं।" यह कहकर केविन वापस उस युवक यानी लोनेपो गांपो की तरफ मुड़ा और सिर झुका कर उसे वापस नमस्ते किया।

"नमस्ते…!"

"ताशी दिले…! नमस्ते…! नमस्ते..ए..ए...!" लोनेपो गांपो ने भी सिर झुका कर वापस अभिवादन किया।

केविन ने आगे बढ़कर उसके कंधे को थपथपाया और कहा "क्या तुम अपनी टीम को लेकर आए हो?"

लोनेपो गांपो ने कुछ नहीं कहा बस मुड़कर वहां से कुछ दूर खड़े पांच-छह युवकों की तरफ इशारा किया। केविन ने एजेंट अनिरुद्ध को हेलीकॉप्टर से कुछ लाने का इशारा किया और वे उन युवकों की तरफ चल पड़े।

3.
The Wish and the Blessing

Spiti Valley, 2019

उनको स्पीति घाटी में उतरे हुए लगभग 4 घंटे बीत चुके थे। अब तक सूरज भी काफी चढ़ चुका था। आसमान बिल्कुल साफ था। पर वे अब भी वहां लगातार अपने हीरो, अपने नायक एजेंट शेखर का थोड़ा बहुत भी सुराग पाने के लिए जी तोड़ छानबीन कर रहे थे। शायद उन्हें अभी तक कुछ भी हासिल नहीं हुआ था। हताश सा और थका हुआ केविन एक प्लास्टिक की कुर्सी पर बैठा सामने रखे लैपटॉप व उससे जुड़े दूसरे उपकरणों में डूबा हुआ था। निखिला ने केविन के कंधे पर हाथ रखा और कहा

"क्या तुम्हें अब भी कोई उम्मीद है?"

"हां !"

"हां…? क्या मैं जान सकती हूं कि वो क्या है?"

"Manual Search Operation !"

"मतलब अब हमें उसे टेक्नोलॉजी से नहीं बल्कि हर एक जगह पर जाकर ढूंढना होगा? निखिला ने निराश भाव से पूछा।

"हां... यही करना होगा। हमारे पास और कोई दूसरा रास्ता अब बचा ही नहीं है। हम उसे बिना ढूंढे वापस भी नहीं जा सकते हैं। हमारे जीपीएस सिस्टम के हिसाब से वो एक महीने पहले यही था। हो सकता है कि वह ज्यादा दूर तक नहीं निकला हो और यहीं आसपास हो। क्या तुम तैयार हो?"

"हमेशा।" निखिला का जवाब एकदम सीधा और छोटा था।

"तो ठीक है। हम यहां के आसपास के गांवो व पर्यटन स्थलों पर उसके पोस्टर लगा देते हैं। शायद यहां के लोगों ने उसे देखा हो और हमें कोई सुराग मिल जाए।"

"ठीक है, पर हम यहां वहां पहुंचेंगे कैसे? हेलीकॉप्टर से तो सब जगह जा नहीं सकते।"

"वो काम लोनेपो गांपो ने पहले से ही कर दिया है। मैंने उससे तीन चार मोटरसाइकिल मंगवा लिए थे। तो सबसे पहले हम कुंजुम देवी मंदिर से होकर कुंजुम दर्रे से काजा की तरफ जाएंगे और रास्ते में आने वाले सभी गांवो में छानबीन करेंगे। लोनेपो गांपो भी काजा का ही है इसलिए आसपास की सभी जगहों के बारे में जानता है।"

"तो शुरू करते हैं, देर किस बात की है।" निखिला इसके लिए बिल्कुल तैयार थी।

कुछ ही देर में उन लोगों ने वहां फैलाए छोटे से साम्राज्य को वापस समेटा और सिर्फ केविन, निखिला और लोनेपो गांपो मोटरसाइकिल पर सवार होकर अपने गंतव्य की तरफ निकल पड़े। केविन ने दूसरे साथियों को मनाली में इंतजार करने को कहकर उनको हेलीकॉप्टर से रवाना किया।

लोनेपो गांपो ने उनके मार्गदर्शन की कमान संभाली। वह उन्हें सीधे कुंजुम दर्रे से होकर कुंजुम देवी मंदिर की तरफ रवाना हो गया।

केविन, निखिला और लोनेपो गांपो अपनी अपनी मोटरसाइकिल पर सवार होकर बस बर्फीले दर्रे से होकर आगे बढ़ने लगे। वैसे तो निखिला मोटरसाइकिल चलाने में उस्ताद थी, पर उसने कभी ऐसी बर्फीली जगह का अनुभव ना था इसलिए उसे काफी परेशानी हो रही थी। पर वहां का अत्यंत रमणीय व कभी न भूल पाने वाला अनुभव उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहा था।

उबड़ खाबड़ और नुकीले पत्थरों से भरा कहीं चौड़ा तो कहीं संकरा, कहीं छोटे तो कहीं बड़े जल प्रवाह, कभी सीधी चढ़ाई तो कभी ढलान, इन सभी बर्फीले रास्तों, पहाड़ों, घाटियों, जलधारा, बर्फीले वनों से भरे इस दर्रे के हर घड़ी बदलते अनुभव का आनंद लेते हुए वे अपने गंतव्य की तरफ बढ़ चले।

अनगढ़ और अप्रतिम सौंदर्य से युक्त यह बर्फीला दर्रा, तेज धूप में सूर्य की किरणें इसका सौंदर्य दुगुना कर रही थी। नुकीले पत्थरों से भरा और कई बेहद घुमावदार मोड़ो से युक्त इस दर्रे के आसपास के इलाके में अब भी काफी कोहरा छाया हुआ था। प्राचीर और किलों की तरह खड़े इन बर्फीले पहाड़ों व कल कल करते झरनों की भव्यता का कोई मुकाबला नहीं था। जो निखिला अनुभव कर पा रही थी वह प्रकृति का एकदम नैसर्गिक, शुद्ध, अद्भुत और अविस्मरणीय रूप था। वहां सब कुछ था। पर इन सबके बाद भी निखिला को किसी चीज की कमी खल रही थी। किसी अपने की। शेखर की।

निखिला और केविन के आगे चल रहे लोनेपो गांपो ने अपनी मोटरसाइकिल की गति धीमी की और सड़क के एक तरफ रोक दिया। लोनेपो गांपो की इस पहल से निखिला और केविन दोनों भी जो इस नैसर्गिक दुनिया में खोए हुए थे, वापस वर्तमान में लौट आए और उन्होंने भी अपनी मोटरसाइकिल रोक दी।

"क्या हुआ ? लोनेपो।" केविन ने अपनी मोटरसाइकिल से नीचे उतर कर अपने मार्गदर्शक लोनेपो गांपो से पूछा।

लोनेपो गांपो ने मुंह से कुछ नहीं कहा बस एक तरफ हाथ से इशारा किया। उस दिशा में देखते ही केविन के मुंह से निकला
" ओह ! मंदिर... कुंजुम देवी का मंदिर।" और वो तीनों उस छोटे से किंतु भव्य मंदिर की तरफ चल दिए। खूबसूरत रंग-बिरंगे पताकों से छाया हुआ, अनेक रहस्यों से भरपूर यह यहां की अधिष्ठात्री देवी कुंजुम देवी का मंदिर है। इस दर्रे से जाने वाले लगभग सभी वाहन

कुंजम माता के मंदिर पर सर झुकाते हुए जाते हैं। उन तीनों ने माता की मूर्ति के सामने सिर झुका कर प्रार्थना की।

निखिला, केविन की तरफ मुड़ कर बोली "मैंने सुना है यहां आने वाले श्रद्धालुओं में यह विश्वास है की सच्चे मन से मांगी गई मन्नत माता कुंजुम जरूर पूरी करती है?"

"बिल्कुल सही सुना है तुमने बेटी।" जवाब सुनकर निखिला पीछे मुड़ी। क्योंकि उसके प्रश्न का जवाब केविन ने नहीं बल्कि उनके पीछे खड़े एक साधु ने दिया था। उनके पीछे श्वेत धवल व लंबी गुथी हुई दाढ़ी वाला वृद्ध साधु खड़ा था। उसकी बड़ी-बड़ी लाल आंखें, व्रत लेकिन लंबा और बलिष्ठ शरीर जो की पूरी तरह राख से मला हुआ था, एक हाथ में लोहे का भारी और लंबा त्रिशूल तथा दूसरे हाथ में मैला सा तांबे का कमंडल, वस्त्र के नाम पर केवल एक धोती। किसी को भी भयभीत करने के लिए यह काफी था। उसके कमर में छोटी-छोटी घंटियां बंधी थी जो शरीर के साथ-साथ हिलते हुए टन टन की आवाज निकालती थी।

उसके शरीर से वह एक योद्धा जैसा प्रतीत हो रहा था, तो उसकी वेशभूषा से वह एक महान तपस्वी सा। प्रथम दृष्टि में तो निखिला और केविन भी उसे देखकर घबरा से गए। पर उस साधु के चेहरे पर गर्वीली सी मुस्कुराहट ने उन दोनों की घबराहट को पल भर में ही दूर कर दिया। निखिला ने सिर झुका कर वृद्ध साधु को प्रणाम किया। साधु ने भी अपने हाथ ऊपर उठा कर उससे आशीर्वाद दिया।

"तुम चाहो जो माता से मांग सकती हो। वो जरूर पूरा करेगी। जिसे तुम ढूंढ रही हो, वह जरूर मिलेगा।" यह कह कर उस साधु ने निखिला के हाथ में एक सिक्का रखा और कहा "बेटी ! हमारी मान्यता है की मन्नत मांगने के बाद अगर सिक्का माता की मूर्ति से चिपक जाता है तो मान लेना कि तुम्हारी मांगी हुई मन्नत जरूर पूरी होगी।"

निखिला ने आश्चर्य से साधु को देखा और फिर केविन की तरफ मुड़कर मुस्कुराई। केविन ने भी मुस्कराकर उसे आगे बढ़ने का इशारा किया। निखिला ने वापस माता के सामने सर झुका कर मन ही मन उनसे प्रार्थना की और उस सिक्के को माता की मूर्ति पर चिपकाने का प्रयास किया। वह सिक्का एक पल में ही माता की मूर्ति से चिपक गया। निखिला पीछे मुड़ी उसने देखा केविन, लोनेपो और वह साधु स्नेह से मुस्कुरा रहे थे।

उन तीनों ने उस साधु से विदा ली और वापिस अपनी मोटरसाइकिल की तरफ चल दिए। मोटरसाइकिल पर बैठते ही केविन ने निखिला से कहा "वैसे मैं तुम्हारे व्यक्तिगत मामले में दखल अंदाजी नहीं करना चाहता हूं पर मैं यह जरूर जानता हूं कि तुमने माता से क्या मन्नत मांगी है।"

निखिला ने अपनी मोटरसाइकिल को चालू किया और व्यंग्य से मुस्कुराकर कहा "हां तुम जानते हो!"

लगभग एक घंटे का सफर करने के बाद रास्ते में किब्बर गांव आया पर उन्होंने वहां रुकने के बजाय आगे का सफर जारी रखा। क्योंकि लोनेपो ने केविन को बताया कि पिछले कई दिनों से वह किब्बर गांव में रह रहा था। उसने गांव वालों को एजेंट शेखर की फोटो दिखाई थी पर किसी भी गांव वाले ने उस चेहरे को कभी नहीं देखा था। इसीलिए उन्होंने वहां जाना बेकार समझा और सीधा आगे गाजा गांव की तरफ बढ़ गए।

उन्होंने रास्ते में आने वाले गांवो पिंजुर, की, रंग्रिक और नेकेड में छानबीन की पर कुछ भी हासिल नहीं हुआ था। आखिर में वे स्पीति नदी के किनारे बसे गाजा गांव पहुंचे। उन्होंने यहां पर भी लगभग दो घंटे तक हर प्रमुख जगह पर छानबीन की। जगह जगह पर पोस्टर लगवाए। अभी शाम हो चली थी। पर उनकी खोज पूरी हुई नहीं हुई थी। इसलिए उन्होंने आज रात गाजा में ही रुकने का फैसला लिया। उन्होंने गाजा में रॉ एस्कापदेस कैंप में अपना रेन बसेरा बनाया।

लगभग सूर्यास्त का समय हो चला था। बर्फ से ढके पहाड़ों व शिखरों पर गिरती सूरज की किरणों से ऐसा प्रतीत होता जैसे उन पर स्वर्ण बिखर गया हो। रंग बदलते हिमालय की चोटियों यह नजारा अपने आप में अद्भुत था। हिमालय की लंबी श्रृंखला पर सूर्यास्त का यह सुंदर दृश्य हर पर्यटक की दिन भर की थकान दूर करने वाला होता है। निखिला को बचपन में किताबों में पढ़ें शब्द याद आ रहे थे "सूर्य न तो अस्त होता है और न उदय, हम ही जागकर सो जाते हैं।"

अभी निखिला इन्हीं सुंदर दृश्यों में डूबी हुई थी कि केविन ने आकर कहा "निखिला! क्या हमें काजा मोनेस्ट्री चलना चाहिए? वहां ज्यादा पर्यटक आते हैं।"

"हां, जरूर।" निखिला ने स्वर्ण से चमकते पहाड़ों से नजर हटाए बिना ही जवाब दिया।

कुछ देर में ही वे काजा मॉनेस्ट्री यानी प्रसिद्ध बौद्ध मठ के नजदीक खड़े थे। वे वहां आ जा रहे पर्यटकों व बौद्ध भक्षुओं को बारी बारी से एजेंट शेखर की तस्वीर दिखा कर उनसे उसके बारे में पूछ रहे थे। अभी वे एक सिर मुंडाए, केसरिया वस्त्र पहने एक वृद्ध बौद्ध भिक्षु से वार्तालाप कर ही रहे थे की उन्हें अपने पीछे से एक डरावनी व रोबदार आवाज में किसी ने कहा...

"रुद्रा..आ….! रुद्रा..आ….!"

केविन और निखिला ने पीछे मुड़कर उस आवाज की तरफ देखा। सामने का दृश्य देखने मात्र से ही उन दोनों के शरीर में सिरहन सी दौड़ गई। राख में लिपटा, मलिन सी और बिखरी जटाओं व भयानक लाल आंखों वाला हाथ में त्रिशूल लिए एक अधेड़ अघोरी साधु, अंगुली से निखिला के हाथ में शेखर की तस्वीर की तरफ इशारा कर रहा था। वह अघोरी साधु खुद सहमा सा था और उसका हाथ भी कांप रहा था। उसने कांपते हुए होठों से फिर दोहराया

"रुद्रा... !"
एक पल के लिए निखिला और केविन को सांप सूंघ गया और वे जड़वत से हो गए। वे सुन्य भाव कभी उस साधु को देखते तो कभी शेखर की तस्वीर को। काफी साहस करके केविन ने अपना मुंह खोला

"रुद्र….? कौन…? कौन रूद्र ?"

उस साधु ने आगे बढ़कर निखिला के हाथ से शेखर की तस्वीर ली और कहा

"यह रुद्र हैं।"

केविन ने थोड़ा सहज होकर साधु से कहा "नहीं साधु महाराज, यह आपका कोई रुद्र नहीं बल्कि हमारे दोस्त शेखर की तस्वीर है। हम इसे ढूंढ रहे हैं। क्या आपने इसे कहीं देखा है?"

अघोरी साधु ने गुस्से से केविन को देखा और कहा "देखा है! पर यह रुद्र है। बस इस तस्वीर में इसके केश छोटे हैं और वस्त्र थोड़े अलग हैं।"

साधु का जवाब सुनकर केविन और निखिला खुशी से पागल से हो गए।

"कहां…? कहां देखा आपने इसे ?" निखिला और जानने के लिए बेताब थी।

"त्रिशूल पर्वत की तलहटी में। वह महान गुरु मकरंद का शिष्य है।"

"त्रिशूल पर्वत….? क्या आपको पता है वह अभी कहां होगा?"

"मैं पूरे विश्वास से तो नहीं कह सकता हूं पर इतना जानता जरूर हूं कि मकरंद हमेशा कुंभ के मेले में सम्मिलित होते हैं क्योंकि वे उनके अखाड़े के प्रमुख हैं।"

"मतलब प्रयागराज ?" निखिला ने खुशी से उछलते हुए कहा।

"हां! पवित्र प्रयाग!

4.
The Blue Moon

Holy City of Prayag, 2019

" प्रयागस्य पवेशाद्वै पापं नश्यतिः तत्क्षणात्।" अर्थात प्रयाग में प्रवेश मात्र से ही समस्त पाप कर्म का नाश हो जाता है।

सभी तीर्थों का राजा, सृष्टि तथा सभ्यता के आरंभ से ही विद्या, ज्ञान और अध्यात्म का केंद्र प्रयागराज, आज देश का सबसे जीवंत राजनीतिक तथा आध्यात्मिक शहर है।

पुराणों के अनुसार, सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना के बाद प्रयाग में पहला यज्ञ किया था। इसी प्रथम यज्ञ के प्र और याग यानी यज्ञ से मिलकर प्रयाग बना।

अनंत काल से लेकर आधुनिक समय तक इस पवित्र नगर ने इतने महान आत्माओं की से जुड़ी रही है, की उनकी गणना करना भी मुश्किल है। ब्रह्मा जी के प्रथम यज्ञ से लेकर, ऋषि भारद्वाज, ऋषि दुर्वासा और पन्ना को परम ज्ञान की अनुभूति यहीं हुई थी। सम्राट हर्षवर्धन के सब कुछ दान कर देने से लेकर, स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की जन्मस्थली के रूप में यह पौराणिक नगरी आज भी वैसे ही जीवंत है, जैसे हजारों वर्ष पहले थी।

पुराणों में अयोध्या, मथुरा, मायावती, काशी, कांची, उज्जैन, और द्वारका ये सात परम पवित्र नगरी मानी गई हैं। और इन सातों को तीर्थ महाराजाधिराज प्रयाग की पटरानियां मानी गई है। इन्हीं सब कारणों से भूमण्डल के समस्त तीर्थो में प्रयागराज को सब तीर्थों का राजा तथा श्रेष्ठ तीर्थ माना गया है।

प्रयाग की इस पवित्र देव भूमि पर ही मोक्ष दायिनी गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम होता है। इसलिए इस स्थान का महत्व और महिमा और बढ़ जाती है। यह वही स्थान है, जहां से वनवास जाते वक्त प्रभु श्रीराम को केवट ने गंगा पार कराया था।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी राम चरित्र मानस में तीर्थराज की महत्ता का बड़ा ही सुंदर वर्णन करते हुए लिखा है-

"प्रात प्रातकृत करि रघुराई, तीरथराजु दीख प्रभु जाई।।
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी, माधव सरिस मीत हितकारी।।
चार पदारथ भरा भंडारू, पुन्य प्रदेश देश अति चारू।।"

ऋषियों की नगरी, साधुओं की नगरी, संतो की नगरी, किन्नरों की नगरी, अघोरियों की नगरी, भक्तों की नगरी, अखाड़े वालों की नगरी, राजनेताओं की नगरी, पर्यटकों की नगरी और हम सब की नगरी में आज फिर से पवित्र कुंभ का मेला भर रहा है। तीन हजार वर्षों से कुंभ का आयोजन होता आया है।

दुल्हन की तरह सजाई गई यह नगरी। घरों तथा सड़कों को पुष्प मालाओं से सुसज्जित किया गया, दीवारों पर खूबसूरत चित्रकारी की गई। हर चौराहे पर बने विशाल दरवाजे l हर घर, दुकान, ऑफिस, गली, नुक्कड़, मोहल्ले, चौराहे व मुख्य मार्गो पर लहराती भगवा पतांके। ठहरने के लिए हजारों की संख्या में बने विशाल तथा भव्य पांडाल। श्रद्धालुओं के स्वागत के लिए हेलीकॉप्टर से बरसते फूल। कदम कदम पर लगे लाउड स्पीकरों में बजते भजन और मंत्र। हर तरफ रंग बिरंगी रोशनी ही रोशनी । गंगा की विशाल लहरों की गूंज। हर किसी को मंत्रमुग्ध कर देने वाला ये देविक ऊर्जा से भरा हुआ वातावरण।

लाखों लोगों का यह जन सैलाब किसी महासागर सा प्रतीत होता। बच्चे-बड़े, पुरुष-महिलाएं, देसी-विदेशी, गरीब-अमीर, हर जाति, हर किस्म के लोग। वृद्ध साधु, अधेड़ साधु, युवा साधु, किशोर साधु, पुरुष साधु, महिला साधु, किन्नर साधु, नागा साधु, अघोरी साधु हर तरफ भगवा धारण किए साधु ही साधु ! अस्त्र-शस्त्र, हर्षोल्लास और 'हर हर महादेव' के नारों के साथ शाही स्नान के लिए निकलते साधु-संत !

इन असंख्य लोगों के बीच निखिला, केविन तथा उनके दूसरे साथी उस अघोरी साधु के पीछे-पीछे लोगों से धक्का-मुक्की करते हुए लगातार आगे बढ़ रहे थे। केविन और निखिला को उस भयानक सा दिखने वाले साधु के साथ हुए लगभग पूरे 24 घंटे हो चुके थे। उस साधु की मद्यसिंचित लाल आंखें, काली व घनी भौहे, मोटे व फटे हुए होंट उसको और डरावना बनाते थे। उसके लंबे चौड़े ललाट पर सिंदूर व भभूति से त्रिपुंड बना था। गले में असंख्य रुद्राक्ष की मालाएं झूलती रहती थी। उसका शरीर अन्य साधुओं की तुलना में काफी लंबा व बलिष्ठ था।

उसके एक हाथ में कमंडल तो दूसरे हाथ में भारी भरकम लौह दण्ड हमेशा रहता था। उसके दण्ड में अनेक पताकाएं व छोटी-छोटी घंटियां बंधी रहती थी। जिन से लगातार भिन्न भिन्न प्रकार की ध्वनियां निकलती रहती थी। केविन और निखिला तो उसकी सूरत देख कर हीडर रहे थे। पर उनके लिए केवल वही एक सहारा था। केवल वह भयानक साधु ही उन्हें उनकी मंजिल तक पहुंचा सकता था। केवल वही उनको, उनके शेखर से मिलवा सकता था। अतः वह चुपचाप उसके पीछे चल रहे थे।

आखिर निखिला, केविन, वह अघोरी साधु और उनके कुछ दूसरे साथी उस इंसानी रूपी समुद्र से निकलकर उस जगह पहुंचे जहां पर साधु संतों के बीच खेल कूद तथा मनोरंजन प्रतियोगिता के लिए स्थल बनाया गया था। सैकड़ों की संख्या में मौजूद संत

तथा दर्शकगण अलग-अलग प्रकार के खेल क्रीड़ाओं मैं व्यस्त थे। हो हल्ला करती भीड़ को चीरते हुए वे अंत में उस प्रांगण में पहुंचे जहां मल युद्ध की प्रतियोगिता हो रही थी। सैकड़ों की संख्या में साधु गण तथा दर्शक गोलाई में खड़े होकर योद्धा साधुओं के बीच हो रही मल युद्ध प्रतियोगिता का पूरा लुफ्त उठा रहे थे।

दीवार सी मजबूत इस भीड़ को भेदते हुए वे सबसे आगे तक पहुंचे जहां से मल्ल युद्ध का दृश्य साफ दिखाई दे रहा था। बादलों सी उड़ती राख और धूल में सब कुछ देख पाना मुश्किल था। फिर भी वे देख सकते थे कि वो संत खिलाड़ी एक दूसरे को पछाड़ने में लगे हुए थे। कम से कम पांच खिलाड़ियों की जोड़ी उस समय मैदान में जमी हुई थी। ये साधु खिलाड़ी, शरीर से भी काफी मजबूत तथा लंबे चौड़े थे। बिल्कुल असल में मल्ल योद्धा से लग रहे थे। इन साधुओं की उठापटक को थोड़ी देर चलने के बाद किसी ने जोर से शंखनाद किया और इस प्रतियोगिता का समापन की घोषणा की। अब नए खिलाड़ियों के मैदान में आने का संकेत था।

तभी घोषणा हुई "अब प्रतियोगिता नागा बाबा जन्मेजय तथा अघोरी बाबा मकरंद के शिष्यों के बीच होगी।" वैसे जन्मजय व मकरंद काफी प्रसिद्ध साधु थे, और वे कई वर्षों से मित्र भी थे। वे हर बड़े धार्मिक अनुष्ठान में मिलते थे और हमेशा की तरह उनके शिष्यों में मल्ल युद्ध की होड़ रहती थी। पर इस बार की यह प्रतियोगिता उनके लिए बिल्कुल अलग थी। क्योंकि इस बार मकरंद ने अपने मित्र को चुनौती दी थी कि इस महाकुंभ में केवल उसका एक ही शिष्य जन्मेजय के पांच शिष्यों के साथ मल्ल युद्ध करेगा। इसकी घोषणा भी अभी-अभी कर दी गई थी। इसलिए सारे दर्शक इस विचित्र सी होने वाली प्रतियोगिता के लिए पागलों की तरह चिल्ला चिल्ला कर 'हर हर महादेव' के नारों से खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ा रहे थे। वे सब उस योद्धा की एक झलक मात्र पाने के लिए बेचैन से हो रहे थे।

इस घोषणा के साथ ही वहां पर खड़ी भीड़ ने सिकुड कर एक छोटा सा गलियारा बनाया ताकि नए खिलाड़ी मैदान में आ सके। पहले जन्मेजय के शिष्यों ने मैदान में आना शुरू किया। एक के बाद एक पांच बलिष्ठ नागा साधु मैदान में आए। एकदम धूल धूसरित, राख से मली हुई विशाल काया वाले इन साधुओं ने हर हर महादेव का जयकारा करते हुए मैदान में प्रवेश किया। भीड़ ने जोरदार तालियों तथा हर हर महादेव के नारों से उनका स्वागत किया। वो पांचों मल्ल योद्धा मैदान के बीच में पहुंचकर अपने शरीर साथ लाए राख मलने लगे। वो कभी दंड बैठक करते तो कभी अपनी भुजाएं को कड़का कर दर्शकों को दिखाते।

जनमानस के लिए रहस्य व जिज्ञासा का केंद्र ये नागा साधु। अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति व सन्यासी जीवन जीने की प्रबल भावनाओं वाले इन साधुओं का कहना ही क्या। सनातन परंपरा की रक्षा करने वाले ये साधु हमेशा भस्म, भगवा और रुद्राक्ष से

सुसज्जित रहते हैं। ये साधु कहां से आते हैं, कहां रहते हैं और कुंभ खत्म होते ही कहां चले जाते हैं। यह सब एक रहस्य ही है। तपस्या के साथ ही ये नागा साधु हथियार चलाने में भी कुशल होते हैं। इन साधुओं की बहादुरी का वर्णन स्वयं इतिहास भी करता है। ऐसे कई युद्धों का वर्णन मिलता है, जिनमें इन साधुओं ने बुरी ताकतों के खिलाफ जमकर लड़ाई लड़ी थी। ये साधु आज भी भारतीय संस्कृति और दर्शन के सनातनी मूल्यों का अध्ययन और अनुपालन करते हुए एक संयमित और कठोर जीवन जीते हैं। और समय आने पर अपने ज्ञान व शारीरिक क्षमता का प्रदर्शन भी करते हैं। आज इस कुंभ के मेले में यही कर रहे हैं।

इसी बीच एक बार फिर से घोषणा हुई "अब मैदान में प्रवेश करेंगे महान मकरंद के शिष्य, रुद्र !!!"

यह नाम सुनते ही वहां जमी भीड़ हाथियों सी चिंगाड़ने लगी, ढोल बेहताशा बजने लगे, कान फाड़ देने वाली शहनाइयां बजी। साधु जोर जोर से चिमटे तथा खड़ताले बजाने लगे। अघोरी साधु अपने त्रिशूल तथा भालों को जमीन पर जोर-जोर से पटकने लगे। गलियारे में राख और सिंदूर के विस्फोट होने लगे। फूलों की बारिश होने लगी। आसमान में हवा के साथ बहते बादल रुक से गए। आसपास चल रही दूसरी प्रतियोगिताओं के दर्शक तथा खिलाड़ी भी कुछ पलों के लिए ठहर गए। पूरा का पूरा प्रयाग एक ही जगह पर केंद्रित सा हो गया।

और आखिर वो मैदान की तरफ निकल पड़ा। राख के छाए बादलों से उसकी एक हल्की सी आभा दिखी। भीड़ में अचानक चुप्पी से छा गई। लोग उसकी एक झलक देखने के लिए चिल्लाना चीखना भूल से गए। एक ही क्षण में वहां सन्नाटा सा छा गया। हर एक नजर बस उसे सबसे पहले देखना चाहती थी।

शांत हुई भीड़ में उस साधु ने निखिला की तरफ मुड़ कर जोर से चिल्ला कर कहा "लो वो आ गया, जिसको तुम कहां-कहां तलाशते फिर रहे थे।" निखिला ने अपनी नजरें वापस गलियारे की तरफ मोड़ी।

गांजे से भरी चिलम मुंह पर लगाए। पूरा शरीर राख से मलिन। गले में असंख्य रुद्रक्षो की मालाएं। हीरो सी चमकती एकदम नीली और नशीली आंखें। पूरे माथे पर सिंदूर। गुथी हुई जटाएं उसके कंधों तथा पीठ पर लहरा रही थी और सिर पर बना हुआ भव्य जुड़ा। कानों में चमकते बड़े बड़े कुंडल। किसी पहाड़ी तेंदुए की खाल की बनी लंगोट। हाथी सी मदमस्त चाल। होठों पर मस्तानों सी मुस्कुराहट। लंबे लंबे डग भरता हुआ आखिर वह मैदान के अंदर पहुंचा।

हर कोई बिना पलके झपकाए सिर्फ उससे ही देख रहा था। वह बिल्कुल भी कोई साधारण इंसान या साधु नहीं लग रहा था। वह तो साक्षात महाकाल, महादेव का विध्वंसक रूप; रूद्र सा ही दिखाई पड़ रहा था। वहां पर एक बार फिर से रुके हुए ढोल, नगाड़े,

शहनाइयां और करताल बजे उठे। हर तरफ 'हर हर महादेव', 'हर हर महादेव' का ही स्वर सुनाई देने लगा।

केविन और निखिला ने एक दूसरे की तरफ देखा और शायद यह कहा 'क्या तुम्हें लगता है, यह वही है ! हमारा शेखर!'
उन दोनों की आंखों में कोई जवाब ना था।

रूद्र ने मैदान में आकर अपनी चिलम को पीछे खड़े अंकुश की तरफ उछाला। फिर उसने एक ही झटके में अपने गले में लटक रही रुद्राक्ष मालाओं को तोड़कर दर्शकों की तरफ उछाला। और कंधों को झटका देकर उन पर पड़े भगवा अंगोछे को नीचे गिराया। उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर एक जोरदार अंगड़ाई ली और गर्दन को बब्बर शेर की तरह इधर-उधर मरोड़ा।

रुद्र के इतना करते ही सामने खड़े दो मल्ल योद्धा उस पर बिजली की तरह टूट पड़े। जितनी तेज गति से वे योद्धा रुद्र के पास पहुंचे उतनी ही तेज गति से हवा में उछलते हुए धड़ाम से मुंह के बल जमीन पर गिरे। यह इतना जल्दी हुआ कि वहां खड़े दर्शकों को पता तक ना चला कि वहां क्या हुआ। केवल रुद्र ही जानता था उसने क्या किया। वे दोनों साधु योद्धा रुद्र की दोनों टांगे पकड़ कर उसे जमीन पर गिराने के उद्देश्य से उस पर झपटे थे। रूद्र ने उन दोनों को अपने पैरों तक पहुंचने से पहले ही दोनों हाथों से उनको कमर में से उठाकर एक झटके में पीछे की तरफ उछाल फेंका। वह बेचारे वापस उठने के लायक नहीं रहे और चुपचाप जमीन पर ही लेटे रहे।

रुद्र के चेहरे पर एक कुटिल सी मुस्कुराहट आई। उसने वापस गर्दन मरोड़ कर दूसरे योद्धाओं को हमले के लिए आमंत्रित किया। पहले तो वो तीन बचे हुए साधु योद्धा थोड़ा शकपकाए, पर उन्होंने भी एक ही पल में निर्णय लिया और रूद्र की ओर लपके। रूद्र अपनी जगह से हिला तक नहीं। दर्शकगण रुद्र के पहले कारनामे को ठीक से देख और समझ नहीं पाए थे, इसलिए उन्होंने इस बार अपनी नजरें रूद्र के ऊपर ही गड़ा के रख दी। वे इस पल को बिल्कुल भी गवाना नहीं चाहते थे।

वैसे तो वो तीनों साधु योद्धा एक ही साथ आगे बढ़े। पर उनमें से एक रूद्र के पास उन दो बाकी से पहले पहुंचा। रुद्र ने एक कदम पीछे किया अपने शरीर को थोड़ा सा नीचे झुकाया और एक ही झटके में उस योद्धा के नीचे जाकर उसे अपनी गर्दन पर उठा लिया। रुद्र ने उसे अपने दोनों हाथों से सिर से भी ऊपर उठाया और बाकी आ रहे दो साधु योद्धाओं पर पूरी ताकत से फेंका। वह तीनों साधु योद्धा एक साथ जमीन पर गिरे और वापस हिले तक नहीं। रुद्र ने हाथ जोड़े और मस्तक झुका कर उन योद्धाओं को नमस्कार किया और वापिस गलियारे की तरफ मुड़ गया। दर्शक विक्षिप्त से हो गए। वे अभी भी समझ नहीं पा रहे थे कि वहां क्या हुआ था। यह प्रतियोगिता केवल कुछ पलों की ही थी।

वहां अब बस एक ही स्वर सुनाई दे रहा था। हर हर महादेव ! हर हर महादेव ! हर हर महादेव!

5.
Revelation-Part 1

Holy City of Prayag, 2019

रूद्र ने गलियारे की तरफ एक दो कदम ही बढ़ाएं थे कि अचानक वह ठिठका। उसके दिमाग में कुछ डरावनी सी स्मृति उभर आई। उसके पूरे शरीर में सिरहन सी दौड़ गई। उसके पैर जम से गए। खूबसूरत नीली आंखें अचानक चौड़ी और भयानक राक्षस सी लाल हो गई। उसके नथुने भूल गए। सांसे अप्रत्याशित रूप से तेज चलने लगी।

उसने एक झटके में ही अपने साथ चल रहे हैं अंकुश के हाथ से त्रिशूल छीना और तेज गति से पीछे मुड़ते हुए पूरी ताकत से उसे छोड़ दिया। इससे पहले लोग देख और समझ पाते कि वहां क्या चल रहा था। वह त्रिशूल दर्शक दीर्घा में सबसे आगे खड़े एक व्यक्ति की छाती में घुसा। इसके साथ ही वहां धाएं करके पिस्टल से गोली चलने की आवाज हुई।

वहां पर खड़ी भीड़ ने एक साथ दो लोगों को जमीन पर गिरते देखा। एक था वह पिस्टल से गोली चलाने वाला आदमी और दूसरा रुद्र। दोनों के निशाने बिल्कुल अचूक निकले।

अचानक हुए इस हादसे ने वहां कोहराम मचा दिया। लोगों में भगदड़ मच गई। लोग चिल्लाते हुए इधर उधर बेहताशा भागने लगे। केविन और निखिला और दूसरे साथियों ने अपनी रिवाल्वरे निकाली और वहां सुरक्षा के लिए बांधी गई लकड़ी की दीवार को फांद कर मैदान में आ गए। उन्होंने तुरंत ही रूद्र के पास एक सुरक्षात्मक घेरा बना दिया।

उस घटना को लगभग दो घंटे बीत चुके थे। उस बड़े से पांडाल में बहुत देर से शांति छाई हुई थी। एकदम भयानक सन्नाटा था। अखाड़ा प्रमुख मकरंद पांडाल मे एक आसन पर बैठे थे। रुद्र, मकरंद के पास लगे आसन पर बैठा था। रूद्र के दाएं कंधे पर बंधी हुई मरहम पट्टी से खून के धब्बे साफ दिखाई दे रहे थे। अंकुश, कौस्तुभ और अथर्व मकरंद के आसन के पास जमीन पर बैठे थे। केविन और निखिला, मकरंद के सामने खाली पड़ी एक कुर्सी के अगल बगल में खड़े थे। शायद वे सभी उस खाली कुर्सी पर बैठने वाले के इंतजार में थे। दूसरे सभी साधुओं को पांडाल के बाहर इंतजार करने के लिए कहा गया।

रूद्र लगातार निखिला को ही घूरे जा रहा था। और निखिला भी रूद्र को इसी प्रकार के अविचल भाव से देखे जा रही थी। निखिला की आंखें नम थी। उसके चेहरे पर प्रसन्नता व दुख दोनों का मिश्रित भाव था। निखिला की उपस्थिति में रूद्र को अपनी स्मृतियों में हलचल दिखाई पड़ रही थी। वहां मौजूद सभी लोग कभी रुद्र की तरफ देखते तो कभी निखिला की तरफ। पर उन दोनों को तो जैसे कुछ भान ही ना हो। वो दोनों तो लगातार एक दूसरे की आंखों में डूबे जा रहे थे।

केवल मकरंद और केविन मंद-मंद मुस्कुरा रहे थे। केवल वो दोनों ही जानते थे कि वहां क्या चल रहा था। बाकी सभी लोग आश्चर्य से फटी आंखों से कभी इधर तो कभी उधर देखने में ही लगे हुए थे।

यह काफी देर तक चलता रहा। रूद्र का मन हिल चुका था। उसे अपनी पुरानी स्मृतियां दिखाई पड़ रही थी। उसका मन अशांत था। उसके अंदर एक प्रकार से ज्वार उमड़ रहा था। उस दोपहर की गर्मी में भी रूद्र को शीतल और ठंडी हवा के झोंकों का एहसास हो रहा था। वह कभी अपने अतीत की स्मृतियों को खोज रहा था तो कभी वर्तमान घटी घटनाओं का कारण। वह पूरी तरह से व्यग्र था। निखिला के भाव भंगिमा भी देखने लायक थी। वह विमोहित सी रूद्र को ही देखे जा रही थी। वह सम्मोहित सी थी।

काफी देर से चल रही इस अलौकिक शांति को मकरंद ने रूद्र के कंधे पर हाथ रखकर तोड़ा। मकरंद के हाथ का स्पर्श पाते ही रूद्र अपने विचारों की श्रृंखला से बाहर निकल कर वर्तमान में लौटा। उसने एक पल के लिए मकरंद को देखा और वापस निखिला की तरफ मुड़ कर कुछ कहने के लिए अपना मुंह खोला। पर उसके शब्द उसके मुंह में ही

रह गए क्योंकि उसी समय दरवाजा खुला और रूद्र तथा वहां मौजूद सभी लोगों का ध्यान दरवाजे की तरफ गया।

दरवाजे से एक अधेड़ महिला ने प्रवेश किया। वह डॉक्टर कुलश्रेष्ठ थी। नीली आंखें, चमकते चेहरे, स्वच्छ गौरवर्ण और वृद्ध लेकिन सुगठित काया वाली डॉक्टर कुलश्रेष्ठ और उनके साथ पांच-छ: सहायकों ने धड़ाधड़ पंडाल में प्रवेश किया।

केविन ने आगे बढ़कर डॉक्टर कुलश्रेष्ठ का अभिवादन किया और और आंखों से रूद्र की तरफ इशारा किया।डॉक्टर कुलश्रेष्ठ दरवाजे से कुछ पलों के लिए यूं ही रूद्र को ऊपर से नीचे तक देखती रही। फिर वह धीमे कदमों से रुद्र की तरफ बढ़ी और रुद्र से कुछ दूरी पर वापस रुक गई। उसके चेहरे पर प्रसन्नता और संशय के मिश्रित भाव थे। रूद्र अपने आसन से उठ खड़ा हुआ, और इस नए आगंतुक की आंखों में झांकने लगा।

कुछ देर तक दोनों यूं ही निशब्द होकर एक दूसरे को देखते ही रहे। फिर डॉक्टर कुलश्रेष्ठ की आंखें नम सी होने लगी और उनसे अश्रु की कुछ बूंदे भी गिरी। उसने आगे बढ़ कर अपने दोनों हाथों को रूद्र के जटाओं से आच्छादित चेहरे पर रखा। पर रुद्र को कुछ महसूस ना हुआ वह अब भी अविचल भाव से डॉक्टर कुलश्रेष्ठ के चेहरे को देखे जा रहा था। डॉक्टर कुलश्रेष्ठ, रूद्र को देखते हुए कांप रही थी। उसकी आंखों से अब अश्रु की धारा बह चुकी थी। उसने रोते हुए रूद्र को कसकर गले से लगाया।

इस समय शायद ही कोई उस पांडाल में रहा होगा जिसकी आंखों में आंसू न था। हर कोई उस करुण और ममतामयी दृश्य को देख कर रो रहा था। वहां केवल मकरंद ही एक ऐसे शख्स थे, जो उन्हें देख कर मुस्कुरा रहे थे। काफी देर तक डॉक्टर कुलश्रेष्ठ ने रूद्र को यूं ही अपने हृदय से चिपका कर रखा। जब उसने रूद्र को गले से हटाकर उसे देखा तो उसके चेहरे के भाव अभी भी पहले जैसे ही थे। वह अभी भी संशय में था।

मकरंद अपने आसन से उठ खड़े हुए और अपने दोनों हाथों को रुद्र के कंधे पर रखा और कहा- "प्रिय रुद्र! अपने संशयमयी संसार से बाहर निकलो और इन्हें देखो। इन्हें अपने गले लगाओ, यह तुम्हारी मां है!"

इस बार संशय में डॉक्टर कुलश्रेष्ठ थी। उसने गौर कर के मकरंद को देखा, और अपने आप को आश्वस्त किया कि उसने पहले उन्हें कभी नहीं देखा था। फिर वो कैसे जानते थे कि मैं उसकी मां हूं। डॉक्टर कुलश्रेष्ठ की दुविधा को समझते हुए मकरंद ने रूद्र से कहा-

"रूद्र, तुम पिछले छ: वर्ष से मुझ से लगातार अपने अस्तित्व के बारे में पूछते रहे और मेरा हर बार यही उत्तर रहा कि समय आने पर तुम्हें पता चल जाएगा। तो यही वो समय है। तुम्हारा अस्तित्व तुम्हारे सामने खड़ा है। तुम इन्हीं के अंश हो। यही तुम्हारी मां है।"

मकरंद की बात सुनकर रुद्र पर तो ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा, पर डॉक्टर कुलश्रेष्ठ ने वापिस रूद्र को अपने हाथों से खींच कर अपने वक्ष में समेट लिया। डॉक्टर कुलश्रेष्ठ बावली सी हो गई थी कभी वह रुद्र के चमकते ललाट को चूमती तो, कभी उसके बलिष्ठ कंधों पर हाथ रखती।

रूद्र को यूं ही रुखा देखकर मकरंद ने अपने कमंडल में से चुटकी भर भभूति निकाली और रुद्र की तरफ उछाली। थोड़ी ही देर में रुद्र की आंखों में भी आंसू थे। उसका पुराना संसार उसकी आंखों में था। वह लगभग सब कुछ याद करने में सक्षम था। वह अपनी मां को पहचान सकता था। उसने झपट कर अपनी मां को अपने गले से लगाया। और फूट-फूट कर रोने लगा। वह अब अपनी असली दुनिया में लौट आया था।

रूद्र को डॉक्टर Kulshretha मिले लगभग एक घंटा बीत चुका था। उस पंडाल में वापस शांति छाई हुई थी। वे सभी अविचल भाव से एक दूसरे को तक रहे थे। उनके लिए यह बड़ी ही विचित्र सी परिस्थिति थी। कोई कुछ नहीं बोल रहा था। किसी भी के पास बोलने के लिए शब्द नहीं थे। आखिरकार मकरंद ने इस चुप्पी को तोड़ा और बोलना शुरू किया "तो आप यह कहना चाहती है कि आप इससे अपने साथ ले जाना चाहती हैं?"

"जी ! आपने बिल्कुल सही समझा है।" डॉक्टर कुलश्रेष्ठ ने रूद्र से नजर हटाए बिना ही मकरंद को जवाब दिया।

"मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं अगर यह आपके साथ जाने के लिए तैयार हो। पर इससे पहले हमें यह बताएं की इस पर हमला करने वाले कौन थे? हम साधुओं कि भला किसी से क्या दुश्मनी है।" मकरंद ने संशय से पूछा।

"इसका प्रमाण आपको देने की कोई जरूरत नहीं है।" डॉक्टर कुलश्रेष्ठ ने अभी भी रुद्र से नजर नहीं हटाई। और वो हटाना भी नहीं चाहती थी।

"तो ठीक है! मैं भी स्पष्ट कर देता हूं की मैं आपको इसे ले जाने की अनुमति तभी दे सकता हूं जब यह स्वयं मुझसे कहेगा। इसकी याददाश्त थोड़ी बहुत वापस आ चुकी है पर अभी-अभी इस पर जानलेवा हमला हुआ। मैं थोड़ा संशय में हूं।"

डॉक्टर कुलश्रेष्ठ ने उस वृद्ध साधु को एक पल के लिए देखा और फिर रुद्र की तरफ मुड़कर कहा "शेखर! क्या तुम अपने घर नहीं चलना चाहोगे?"

रुद्र ने एक बार मुड़कर मकरंद को देखा और संकोच से पूछा "शेखर! कौन शेखर? मेरा नाम….।"

"रुद्र ! इसका नाम तो रूद्र है। मोटी तोंद वाला कौस्तुभ बीच में ही बोल पड़ा।

"नहीं कौस्तुभ। इसका नाम शेखर ही है। यह तो हमें रूद्र रूप में मिला था।

"यह तो इनकी अमानत है जो हमारे पास थी। अब यह सही समय है कि इन्हें वापस लौटा दी जाए।" मकरंद ने डॉक्टर कुलश्रेष्ठ की तरफ इशारा करते हुए कहा।

"धन्यवाद स्वामी जी। कृपया मुझे यह भी बताएं कि यह आपको कहां और किस अवस्था में मिला था।" डॉक्टर कुलश्रेष्ठ ने नम आंखों से पूछा।

"अवश्य!" मकरंद ने आखिरकार रूद्र मिलन के रहस्य को उजागर करना शुरू किया।

"हम हिमालय की यात्रा के दौरान स्पीति घाटी में ठहरे हुए थे……"

6.
The Resurgence

Near the Sacred Lake Surajtaal, 2014

प्राचीन काल से ही देवताओं का प्रमुख निवास स्थान हिमालय! आसमान को छूती, चमकीले बर्फ से ढकी चोटियों वाला यह विशाल हिमालय अपने आप में प्रकृति की एक अद्भुत कलाकृति हैं। अनेक पवित्र नदियों का उद्गम स्थल जो विशाल जन जीवन का पालन पोषण करती है। यहीं से इस देश का प्रारंभ भी होता है। इसके बारे में कहा भी गया है कि-

हिमालयात् समारभ्य यावत् इन्दु सरोवरम्। तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थान प्रचक्षते॥*"- (* बृहस्पति आगम*)*

यानी हिमालय से प्रारंभ होकर इन्दु सरोवर (हिन्द महासागर) तक यह देव निर्मित देश हिन्दुस्थान कहलाता है।

प्राचीन काल में हिमालय में ही देवता रहते थे। यहीं पर ब्रह्मा, विष्णु और शिव का स्थान था और यहीं पर नंदनकानन वन में इंद्र का राज्य था। इंद्र के राज्य के पास ही गंधर्वों

और यक्षों का भी राज्य था। हजारों रहस्य को अपने अंदर समाए आज भी यहां हजारों ऐसे स्थान है जहां तपस्वीयों, ऋषियों और मुनियों का निवास स्थान है। हिमालय के ऐश्वर्य का वर्णन करना भी मुश्किल है।

हिमालय की इस विशाल तलहटी में लगभग सूर्योदय होने लगा था। पवित्र झील पूरी तरह से बर्फ से ढकी हुई थी। सूर्य की लालिमा से सफेद बर्फ भी एकदम रक्तरंजित दिखाई दे रही थी। हवाओं के सन्नाटे और पक्षियों की चहचहाहट के अलावा कोई आवाज नहीं सुनाई दे रही थी। धीरे-धीरे कुछ मंत्रों की आवाज सुनाई दे रही थी। थोड़ी देर बाद कुछ साधु सुबह के स्नान के लिए पवित्र झील की तरफ जाते हुए शिव मंत्र का जाप करते हुए दिखाई पड़ते हैं।

एक साधु ने त्रिशूल जैसे औजार से बर्फ की सतह को तोड़ा और शरीर को जमा देने जैसे ठंडे पानी से स्नान करने लगा और उसके दूसरे साथी भी यही करने लगे। वे सभी नहाते हुए वे महामृत्युंजय मंत्र का जाप कर रहे थे।

विचित्र से दिखने वाले इन साधुओं ने इस भयानक ठंड में भी वस्त्रों के नाम पर केवल एक मैली सी लंगोट पहन रखी थी। पर, असीम और अलौकिक शक्तियों के धनी ये साधु इतनी भयानक ठंड में भी इतने सहज होकर नहा रहे थे, जैसे मदमस्त हाथी तालाब में मस्ती करते हुए नहाते हैं। वे अपनी लंबे-लंबे रोती हुई जटाओं को खोलकर पवित्र झील के जल से धो रहे थे। ज्यादातर समय ये साधु या तो अपने आश्रम में या फिर इसी तरह हिमालय में कठोर तपस्या करते हैं। और केवल कुछ विशेष समारोहों या कुंभ जैसे मेले के दौरान ही सामान्य जनता के सामने आते हैं। त्रिशूल, शस्त्र और चिलम धारण करने वाले ये साधु धूनी रमाते हैं, और कठिन तप करते हैं।

जब सभी साधु अपनी इसी मस्ती में महादेव के नाम का जाप करते हुए स्नान कर रहे थे तभी एक साधु ने कुछ देखा और घबराकर जोर से चिल्लाया।

"अथर्व….!! कौस्तुभ….!!!

"क्या हुआ अंकुश ?" अथर्व अंकुश की तरफ भागते हुए चिल्लाया।

"यहां देखो !" अथर्व ने घबराते हुए एक तरफ इशारा किया।

"भगवान महाकाल दया करें !" अंकुश ने कांपते हुए कहा।

इतने में उनके बाकी साथी भी वहां पहुंच गए और वहां जो नजारा देख, सब के सब स्तब्ध रह गए। झील के किनारे से दस हाथ दूर तैरती बर्फ की शिला पर एक मृत प्राय युवक। एक अधेड़ युवक बर्फ की शिला पर उल्टा लेटा हुआ है, ऐसा जान पड़ता कि शायद मरा हुआ था।

"क्या यह जिंदा है?" कौस्तुभ ने अथर्व की ओर देखकर कहा।

"पता नहीं ! पर हमें इसे बाहर निकालना चाहिए" अथर्व ने कहा।

अथर्व, कौस्तुभ और अंकुश झील की जमी हुई सतह पर धीरे-धीरे कदम रखते हुए युवक की तरफ बढ़ते हैं। उसे धीरे-धीरे घसीटते हुए किनारे पर ले आते हैं। युवक को सीधा लिटा कर अथर्व पहले उसकी नब्ज टटोलता है फिर अपना कान युवक के सीने पर लगा कर उसकी धड़कने सुनने की कोशिश करता है।

"भगवान महादेव कृपा करें इसकी धड़कन अभी चल रही है यह अभी जिंदा है हमें इसे जल्दी से इसे बाबा के पास ले जाना चाहिए, जल्दी करो।" अथर्व ने जोर से चिल्लाते हुए कहां।

अथर्व और कौस्तुभ की मदद से अंकुश ने उस युवक को अपने कंधे पर डाला और तेज कदमों से उनके डेरे की तरफ जाने लगे। यद्यपि कौस्तुभ अकेला चल रहा था फिर भी वह अपनी मोटी और थुलथुली काया के कारण तेज नहीं चल पा रहा था। वहां पर वे उनके पीछे लगभग दौड़ रहा था। जबकि हृष्ट पुष्ट और बलिष्ठ काया वाला अंकुश उस युवक को कंधे पर डाले हुए भी आसानी से लंबी लंबी डींगे भरते हुए चल रहा था। उनके पीछे चल रहा द्रथ उस युवक का चेहरा देखने की कोशिश कर रहा था लेकिन ज्यादा हिलने डुलने के कारण उसका चेहरा साफ नहीं देख पा रहा था।

कुछ ही पलों में वे सब एक पहाड़ी गुफा के पास पहुंचे। गुफा के मुहाने के आसपास छोटी-छोटी अस्थाई अनेक कुटिया बनी हुई थी। उनके बीचों-बीच एक बड़ी सी धूनी बनी हुई थी। उस विशाल धूनी में काष्ठ-कुंद धधक रहे थे। उस विशाल धूनी के चारों और अनेक त्रिशूल, चिमटे व दंड गड़े हुए थे। वह धूनी अनेक पुष्पों व पत्रों से सुसज्जित थी। वहां का पूरा वातावरण सुगंधित धूप से महक रहा था। कुछ साधु उस धोनी के चारों और बैठे हुए थे और कुछ यहां वहां अलग-अलग कामों में व्यस्त थे।

एक साधु जो उनमें सबसे ज्यादा उम्र दराज लग रहा था, वह धूनी के सामने बैठा हुआ योग मुद्रा में लीन था। उस साधु की विशाल व घनी जटाजूट जमीन को छू रही थी।

अथर्व की नजर उस वृद्ध साधु पर पढ़ते ही वह चिल्लाया

"बाबा !!! बाबा!!!"

अथर्व को चिल्लाता देख सारे अघोरी अपने काम को छोड़कर अथर्व की तरफ दौड़ पड़े। लगभग अस्सी वर्ष का वह वृद्ध साधु भी अपनी योग मुद्रा छोड़ कर उठ खड़ा हुआ और उनके पास आने का इंतजार करने लगा।

लाल सुर्ख आंखों वाला था वो साधु, फिर भी एकदम शीतल सा। गले में रुद्राक्ष की कई मालाएं, कान में बड़े-बड़े कुंडल धारण किए और पूरा बदन भभूति से मला हुआ था। वस्त्रों के नाम पर केवल कमर से नीचे भगवा रंग की एक मैली कुचली सी धोती। उसकी श्वेत और लंबी दाढ़ी चांदी की भांति चमक रही थी। उसके कान शरीर के अनुपात से कुछ ज्यादा ही लंबे थे। उसकी ललाट पर अलौकिक तेज था। उसका कद लंबा और शरीर

वृद्ध होते हुए भी एकदम बलिष्ठ था। वह बिल्कुल सिद्धि प्राप्त व अलौकिक शक्तियों वाला सिद्ध तपस्वी था।

उनके पास आने पर वह एकदम धीमी आवाज में बोला "क्या हुआ अंकुश ? कौन है यह ?"

"बाबा; यह हमें पवित्र झील में मिला और यह अभी जिंदा है; इसकी धड़कने अभी चल रही है।" अंकुश ने हांफते हुए कहा। मकरंद ने खड़े-खड़े ही उस युवक की नब्ज देखी। और अंकुश से कहा "इसे कुटिया के अंदर ले चलो। मेरा कमंडल ले आओ, कौस्तुभ !" अंकुश और अथर्व उसे कुटिया के अंदर बड़ी शिला पर सीधा लिटा दिया।

छः फुट से भी ज्यादा लंबा, चौड़ी और मजबूत छाती, उसके उभरे हुए कंधे और छोटे पर घुंघराले काले बाल उसको किसी अलौकिक नायक सा प्रतीत करा रहे थे। इतनी मजबूती से कसा हुआ शरीर शायद हाड मांस का ना बना होकर पत्थर में तराशा हुआ सा प्रतीत हो रहा था। बेहोशी में भी अपने चेहरे पर एक शानदार आभा लिए लगभग तीस वर्ष का यह नवयुवक किसी देवता की भांति ही लग रहा था।

कौस्तुभ ने कमंडल लाकर उस वृद्ध साधु को पकड़ाया। उस वृद्ध साधु ने कमंडल में से एक मुट्ठी भर कर भभूति निकाली और उस युवक के शरीर पर रगड़ी। कौस्तुभ और अर्थ ने भी उसकी सहायता की। कुछ पलों बात उस युवक के शरीर में कंपन होने लगा। उस वृद्ध ने अंकुश को इशारे से युवक को उल्टा लेटाने को कहा। अंकुश और अथर्व ने उसे पेट के बल लिटा दिया। उसकी मजबूत और उभरी हुई मांस पेशियां हर किसी को हैरान कर देने वाली थी। पर इन से भी ज्यादा हैरान कर देने वाली जो चीज थी, वह उसके बाएं कंधे पर एक विशिष्ट गोदना!

त्रिशूलनुमा आकृति वाले इस गोदने ने हर किसी का ध्यान यहीं पर केंद्रित करने पर मजबूर कर रखा था। कुछ पलों के लिए उस वृद्ध की नजरें भी यहीं पर रुक सी गई थी। कुछ पलों तक यूं ही उसे लगातार घूरने के बाद उस वृद्ध ने युवक के कंधे पर हाथ फेरा और महसूस किया की यह शायद कृत्रिम गोदना नहीं था। वह बिना किसी विशिष्ट रंग का था। वह बिल्कुल प्राकृतिक सा लग रहा था। सभी अघोरी उस वृद्ध अघोरी की तरफ इस आशा से देख रहे थे कि कब वह इस चीज का रहस्योद्घाटन करें।

थोड़ी देर बाद उस वृद्ध ने वहां पर छाई चुप्पी को तोड़ा और कहा "अब मैं समझ सकता हूं कि यह युवक इतनी भयानक और विषम परिस्थितियों में भी जिंदा कैसे हैं। मुझे तो यह बिल्कुल भी साधारण युवक नहीं लगता है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस युवक पर स्वयं महाकाल की कृपा है।" उस वृद्ध ने हाथ जोड़कर मन ही मन अपने इष्ट देव से प्रार्थना की और अंकुश की तरफ मुड़कर बोले "अंकुश ! तुम इस युवक के पूरे शरीर पर यह लेप लगा दो और कुछ देर तक इसको विश्राम करने दो। यह जल्दी ही ठीक हो जाएगा।" यह कहकर वह वृद्ध अघोरी कुटिया से बाहर निकल गया और बाकी सभी ने भी यही किया।

सूर्योदय के समय हुई इस घटना को अभी काफी समय हो चुका था। लगभग शाम हो चली थी और आसमान में अंधेरा छाने लग गया था। सभी अघोरी बाहर जल रही आग के पास बैठकर हुक्का पीने में व्यस्त थे। इन सब से अनजान उस युवक ने हल्की सी अंगड़ाई ली और अपनी आंखें खोल कर आसपास के दृश्य को देखने की कोशिश की। उसकी चेतना अब लौट रही थी। उसके कानों में कुटिया के बाहर हो रही हंसी ठिठोली, हल्की सी सुनाई दे रही थी। उसने इन आवाजों को ध्यान से सुनने के लिए लेटे-लेटे ही मुड़कर अपने सिर को थोड़ा नीचे झुका कर बाहर के दृश्य को देखने की कोशिश की।

ऐसा करते ही वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा। उसके गिरने की आवाज सुनते ही सारे अघोरी एक साथ कुटिया के अंदर आने के लिए दौड़ पड़े। अंकुश और अर्थ ने उसे सहारा देकर वापस शिला पर लिटा दिया। "बैठे रहो ! तुम अभी अस्वस्थ हो !" वृद्ध मकरंद ने जोर दे कर कहा। उस युवक ने अचंभित होकर वृद्ध मकरंद तथा दूसरे अघोरियों की तरफ देखा और घबराकर पूछा "आप लोग कौन हैं ? और मैं कहां पर हूं ?"

"हम तो महादेव के भक्त हैं, और यहां हिमालय पर महादेव का ध्यान करने के लिए आए हैं। परंतु तुम कौन हो ? और स्पीति घाटी जेसी दुर्गम जगह पर क्या कर रहे थे ?" मकरंद ने उसके पास बैठते हुए कहा।

"स्पीति घाटी... ?"

इतना ही बोलकर वह युवक वापस बेहोश हो गया।

7.

New Identity

हिमालय की तलहटी, पवित्र झील के पास 2014

गुरु मकरंद और उनके शिष्य अंकुश,अथर्व, कौस्तुभ और लगभग चालीस साधु, लकड़ियों को उस विशाल धूनी में जलाकर उसके चारों तरफ गोलाई में बैठे हुए हुको के कश लगा रहे थे और इस भयानक ठंड में अपने शरीर को गर्म रखने की कोशिश कर रहे हैं। इतनी भयानक ठंड में भी यह लोग ऐसे सहज बैठे थे, जैसे किसी भयानक तूफान में किसी कटे हुए पेड़ का तना। इतनी ठंड में भी इन लोगों ने कपड़े के नाम पर केवल एक लंगोट और गले में कुछ रुद्राक्ष मालाएं पहन रखी थी। वे बार-बार गर्म राख को अपने शरीर पर मल रहे थे ताकि उन्हें ठंड से राहत मिले। केवल मकरंद ही एक् पाषाण शीला पर बैठे हुए थे। बाकी सब साधु जमीन पर बैठकर गांजो के कश लगाते हुए नशे में कुछ बढ़ बढ़ा रहे थे।

मकरंद ने अथर्व की तरफ देखा और आंखों से कुछ इशारा किया। अथर्व ने इशारा समझा और एक जलते हुए अंगारे को नंगे हाथों से ही उठाकर मकरंद के हुक्के में रख दिया। मकरंद थोड़ा सा मुस्कुराया और हुक्के की नली को मुंह से लगाकर जोर से कस खींचा और धुएं का छल्ला बनाते हुए ऊपर की तरफ छोड़ दिया।

अथर्व ने अपना हुक्का कौस्तुभ को पकड़ाया और मकरंद की तरफ मुड़कर बोला "बाबा हमें उस युवक का क्या करना चाहिए हम तो कुछ दिनों में ही यहां से निकल जाएंगे ?"

मकरंद ने मुड़कर कुटिया की तरफ देखा, वह युवक अभी भी निंद्रा में लेटा हुआ दिख रहा था। "हम उसे यहां अकेला नहीं छोड़ सकते हैं, उसका स्वास्थ्य अभी ठीक नहीं है। जब तक वह पूरी तरह से स्वस्थ नहीं हो जाता हमें इसे अपने साथ ही रखना होगा।"

"बाबा आपने देखा उस युवक के कंधे पर भगवान महाकाल का निशान है।" कौस्तुभ ने संशय से पूछा।

"हां कुछ तो खास है इस लड़के में तभी तो यह इतने भयानक हालत में भी जीवित है, जरूर महादेव की कृपा है।"

"हां बाबा, और यह निशान प्राकृतिक लगता है।" अथर्व ने मकरंद की बात को पूरा किया।

"मुझे कुछ खाने को मिलेगा ? मैं बहुत भूखा हूं।"

अनजानी आवाज को सुनकर सारे अघोरी कुटिया की तरफ मुड़ कर देखने लगे।

वह युवक अपने आप उठ कर कुटिया से बाहर आ गया। सभी अघोरी एक टक होकर उसे देखने लगे। वह युवक थोड़ा सा सहमा और फिर धीमी आवाज में वापस गिड़गिड़ाया

"यहां कुछ खाने को है?"

मकरंद अपनी जगह से उठकर उस युवक के पास गए और अपने दोनों हाथ उसके कंधे पर रखकर मुस्कुराहट के साथ बोला " यहां पर हर चीज है। यह संसार का सबसे पवित्र स्थान है। यहां कोई भूखा नहीं मरता। आओ मेरे साथ।"

मकरंद युवक का हाथ पकड़कर उसे आग के पास ले आए और उसे अपनी बैठने की जगह पर बिठा दिया। इसी बीच कौस्तुभ एक दूसरी सिला ले आया और मकरंद के बैठने के लिए उस युवक के पास ही रख दिया। अंकुश ने अंगारों पर रखी केतली में गर्म सूप को एक कटोरे में उड़ेल कर मकरंद को पकड़ा दिया।

"यह लो इसे पिओ ! तुम्हें इससे ताकत मिलेगी, पर ध्यान से पीना; यह बहुत गरम…."

इससे पहले की मकरंद अपना वाक्य पूरा करता उस युवक ने मकरंद के हाथों से कटोरे को एक झटके से छीना और बिना कोई परवाह किए पूरा का पूरा कटोरा अपने मुंह में उड़ेल दिया। उसने एक सांस में पूरा उबलता हुआ सूप पी लिया! मकरंद और दूसरे सभी अघोरियों के मुंह खुले के खुले रह गए मानो वो इंसान नहीं पत्थर की मूर्तियां हो। सभी इसी बात का इंतजार कर रहे थे कि कब वह युवक जलन के मारे जोर से चिल्लाएगा। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ।

उस युवक ने एक हल्की सी डकार ली और मकरंद की तरफ मुड़कर बोला "और क्या है ? कुछ भी चलेगा।"

मकरंद को कुछ सुनाई नहीं दिया। वह तो उस युवक को अभी तक एक टकी से देख रहा था। मकरंद अभी भी निर्जीव सा उस युवक की आंखों में झांक रहा था। उसकी नीली और चमकदार आंखों के सम्मोहन से अभी वह बाहर नहीं निकल पा रहा था। उसे कुछ अलौकिक सा भान हो रहा था।

मकरंद को कुछ ना बोलता देखकर वह युवक थोड़ी और ऊर्जा से बोला "मुझे अभी भी बहुत भूख है; कुछ और भी है खाने को ?"

मकरंद उसकी आंखों के सम्मोहन से बाहर निकला और हड़बड़ा कर बोला "हां.. हां... पर तुम इतना गर्म सूप कैसे पी गए; मुंह नहीं जला?" युवक ने सिर्फ ना में सिर हिला दिया।

मकरंद ने एक बार फिर उसकी आंखों में आश्चर्य से देखा और फिर मुड़कर अंकुश को कुछ इशारा किया। अंकुश तुरंत कुटिया के अंदर गया और एक फटा पुराना सा झोला उठा ले आया और उससे उस युवक के सामने पलट दिया। झोले से कुछ सूखे फल,

बीज और औषधीय नीचे गिरी। युवक पल झपकते ही उन पर टूट पड़ा और सारे फलों को बीज सहित चबा गया। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे एक भूखा शेर भेड़ों के झुंड पर टूट पड़ा है।

कुछ ही देर में उसने सारे फलों को चबाकर उसने एक लंबी डकार ली और चुपचाप वापस अपनी जगह पर बैठ गया, जैसे कुछ हुआ भी नहीं हो।

सारे अघोरी जो अभी तक इस दृश्य को देख कर चुपचाप खड़े थे अचानक जोर-जोर से पागलो की तरह हंसने लगे और एक दूसरे के ऊपर मुक्के जमाने लगे। सभी पागलों की तरह इधर-उधर लौटने लग गए। काफी देर तक पागलों की तरह हंसते रहने के बाद मकरंद ने हाथ उठाकर सभी को चुप होने के लिए कहा।

सभी के शांत हो जाने के बाद मकरंद ने युवक के मजबूत कंधों पर अपने हाथ रखे और कहा "क्या तुम अब स्वस्थ महसूस कर रहे हो?" "हां, अब ठीक लग रहा है।" उसने जवाब दिया।

"मेरा नाम मकरंद है, और ये सभी मेरे शिष्य है I तुम्हारा नाम क्या है ?" युवक ने घूमकर मकरंद को देखा और कहा "मुझे पता नहीं है।"

मकरंद ने आह भरी और कहा "शायद तुम्हारी याददाश्त अभी नहीं आई है, पर तुम बहुत जल्दी स्वस्थ हो रहे हो इसलिए चिंता की कोई बात नहीं है।

"बाबा; इसको तो अपना नाम ही पता नहीं है, आप ही से कोई नाम दे दीजिए ताकि हम इससे इससे बात कर सके !" मोटी तोंद वाला कौस्तुभ बड़ी मासूमियत से बोला। "हां, यह ठीक रहेगा। हमें इसे महाकाल का आशीर्वाद मानकर इसका नाम उन्हीं के नाम पर रखेंगे। इसलिए आज से इसका नाम होगा रूद्र।" "जय महाकाल ! हर हर महादेव ! जय रुद्र !" सभी साधुओं ने एक स्वर में जयकारा किया।

मकरंद ने खांसकर कहा "तो ठीक है। यह तय रहा कि कल सूर्योदय से पहले हम चंद्रताल की तरफ निकल पड़ेंगे। अब रात्रि बहुत हो गई है, सभी सो जाएं। "जय महाकाल ! !" सभी अघोरियों ने एक बार फिर से एक ही स्वर में जयकार किया।

8.
The Secrets of Chandrataal

पवित्र झील चंद्रताल, 2014

हिमालय कि इस पवित्र स्पीति घाटी में लगभग सूर्योदय हो चुका था। बादलों को यह अभी मंजूर नहीं था, इसलिए वे इतने घने और काले थे मानो सूरज को छिपाने की कोशिश कर रहे हो और अभी सूर्योदय नहीं होने का आभास करा रहे हो।

इस खूबसूरत घाटी में प्राकृतिक रूप से उगी जंगली फूलों की सुगंध हर तरफ फैली हुई थी। बिल्कुल चंद्रमा जैसी आकृति वाली यह झील अभी भी सोई हुई लग रही थी। शायद अपनी इसी चंद्र आकृति के कारण इसका नाम चंद्रताल पड़ा है। कभी कभार धीमी हवा के चलने के कारण छोटी लहरों की आवाज सुनाई दे रही थी।

दूर-दूर तक फैली इस लगभग वीरान घाटी में उन अघोरियों के समूह को छोड़कर और कोई मानव या जीव जंतु के होने के कोई संकेत नहीं दिखाई दे रहे थे।

समुद्र तल से लगभग 4400 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह झील बर्फ से आच्छादित पर्वतों और पहाड़ों के कारण एकदम दुग्ध धवल सी जान पड़ती है, जो किसी को भी स्वर्ग सा आभास देती है।

झील के बीचो बीच एक छोटा सा टापू जिसे समुद्र टापू के नाम से जाना जाता है, बिल्कुल धुंधला सा दिखाई पड़ रहा है l झील के बाएं तरफ से एक छोटी सी धारा निकली हुई है, जो आगे चलकर लाहौल जिले के केलांग के पास चंडी गांव में एक दूसरी धारा जो कि सूरज ताल से निकलती है, मिलकर चंद्रभागा नदी का निर्माण करती है और आगे चलकर यही नदी जम्मू कश्मीर में चेनाब नदी का रूप धारण कर लेती है।

इस समय सर्दियों का मौसम और अत्यधिक बर्फबारी होने के कारण यहां पर केवल इन शिव भक्तों के अलावा कोई और नहीं आता है। यह घाटी और पवित्र झील लगभग अगम्य हैं। अघोरियों द्वारा लगाई गई आग लगभग बुझ चुकी है। हां, बस कभी-कभी हवाओं के झोंके से अंगारे चमक उठते हैं। सभी अघोरी निर्विवाद रूप से यहां वहां सोए हुए हैं।

वह आज तीसरी रात इन साधुओं के संग सो रहा था। रुद्र ने हल्की सी अंगड़ाई ली और अपने पास सो रहे भारी भरकम कौस्तुभ की टांगे जो उसके चेहरे पर रखी हुई थी;

हटाया और दूसरी तरफ पीठ करके वापस सो गया। लगभग 6 फुट की लंबाई और उभरे हुए मजबूत कंधों वाला यह युवक एक मासूम बच्चे जैसे ही सो रहा था। कुछ पल शांति से सोने के बाद रूद्र ने फिर कौस्तुभ के पैरों को अपने चेहरे पर पाया या शायद रात भर यही चल रहा था। रुद्र ने झटक कर कौस्तुभ की टांगों को हटाया और धीरे से उठ बैठा। रुद्र ने अपने आसपास सो रहे अघोरियों को देखा और एक लंबी अंगड़ाई लेकर उठ खड़ा हुआ।

अभी तक काफी रोशनी हो चुकी थी लगभग हर चीज सांप दिखाई दे रही थी। रूद्र ने ठंडी परंतु खुशबू लिए बर्फीली हवा को महसूस करने के लिए एक लंबी सांस लें और झील की तरफ अपने कदम बढ़ा दिए। कुछ कदम चलने के बाद रुद्र ने एक बार फिर वापस मुड़कर अघोरियों की तरफ देखा, वे अभी भी निद्रा में लीन थे।

रुद्र झील की तरफ बढ़ गया और झील के किनार पर पड़े एक पत्थर पर बैठकर झील की खूबसूरती को निहारने लगा।

कुछ देर तक वहां मूर्तिवत बैठे रहने के बाद रूद्र को किसी ने पीछे से पुकारा, पर रूद्र पर कोई असर नहीं हुआ। वह अभी भी कहीं खोया हुआ था। शायद उसकी समस्त इंद्रिया उस पवित्र झील का रसपान कर रही थी। थोड़ी देर बाद उसको अपने कंधों पर किसी का हाथ महसूस हुआ। उसने बैठे-बैठे ही पीछे मुड़कर देखा।

मकरंद को पीछे देखकर रुद्र निर्विकार भाव सा बैठा रहा। कुछ पल ऐसे ही शांत और भावशुन्य जड़ता से मकरंद को देखता रहा और फिर उठ खड़ा हुआ और उस वृद्ध अघोरी को गर्दन झुका कर अभिवादन किया।

मकरंद की आंखें चौड़ी हुई, होठों पर मुस्कान आई और उसने अपनी गर्दन को थोड़ा ऊपर उठाकर अपने से कहीं ज्यादा लंबे रुद्र की आंखों में देखा। रूद्र ने भी उस वृद्ध गौरी को ध्यान से देखा। वह दुबला पतला सा वृद्ध काफी बुड्ढा हो चला था लेकिन चेहरे पर एक भी झुर्रि थी, उसकी आंखों में आज भी एक युवा जैसा तेज था। उस वृद्ध ने अपने बाल खोले हुए थे, शायद उसने सुबह का स्नान कर लिया था। उसकी लंबी और गुथी हुई बालों की जटाये घुटनों से भी नीचे तक पहुंच रही थी।

कुछ पल यूं ही एक दूसरे में रमें रहने के बाद मकरंद ने प्रश्न किया "क्या अब तुम ठीक महसूस कर रहे हो?" रूद्र ने सिर्फ हां में सिर हिलाया।

"आओ बैठो l" मकरंद उसे वापस बैठने का आग्रह किया और खुद उसके सामने रखे पत्थर पर बैठ गया।

कुछ देर तक वापस शांत रहने के बाद मकान ने कहा "मैं जानता हूं कि तुम्हारी याददाश्त अभी ठीक नहीं है, इसलिए मैं तुम से ऐसे कोई सवाल नहीं करूंगा; जिसका जवाब देने में तुम्हें परेशानी हो। और हां तुम भी मुझे बाबा के नाम से पुकार सकते हो"

रूद्र ने सौम्य भाव से हां भरी और बोला "धन्यवाद बाबा पर क्या आप मुझे यह बताने का कष्ट करेंगे कि मुझे क्या हुआ था, इस समय मैं कहां हूं और हमारी मुलाकात कैसे

हुई ?"

मकरंद ने अपनी झुकी हुई कमर को सीधा किया और और प्यार से कहा "रुद्र ! तुम इस समय संसार के सबसे पवित्र, रमणीक और अलौकिक जगहों में से एक पर हो l हिमालय की तलहटी में बसी इस पवित्र जगह का महत्व किसी स्वर्ग से भी कम नहीं है l यह विशाल और खूबसूरत घाटी; स्पीति घाटी के नाम से जानी जाती है और यह झील जिससे तुम अपनी नजरें नहीं हटा पा रहे हो, चंद्रताल के नाम से जानी जाती है l" रुद्र ने अपनी नजरें वापस झील पर गड़ाई।

"और इस झील को चंद्रताल क्यों कहा जाता है यह तो मैं स्वयं भी नहीं जानता हूं पर हां इस अलौकिक झील के बारे में कई पौराणिक किंवदंतियों जरूर जानता हूं !" यह रमणीक स्थान सर्दियों के समय हम जैसे साधुओं के लिए और गर्मियों में कुछ गिने-चुने पर्वतारोहियों का स्थान है। हमारे जैसे कहीं साधु लगभग हर वर्ष कुछ महीने यहीं पर अपना डेरा जमाते हैं। यह नैसर्गिक स्थान; भगवान महाकाल की भक्ति के लिए बहुत ही अनुकूल है। यहां पर हम अपने तन और मन को पूरी तरह से महाकाल की भक्ति में डुबो देते हैं, और जब यहां सर्दियां कम हो जाती है; तो हम आगे बढ़ जाते हैं।" यह कहकर मकरंद ने अपनी खुली जटाओं को बांधना शुरू कर दिया। उन्होंने अपने बालों को एक एक रुद्राक्ष की माला से बांधकर चूड़ा बना दिया और रूद्र के सवाल का इंतजार करने लगे।

रुद्र ने एक बार फिर से जमी हुई झील की चमकती परत को देखा और मकरंद से कहा "बाबा; आपने अभी कहा था कि इस झील का पौराणिक महत्व है ! वह क्या है ?"

मकरंद ने वात्सल्य भाव से रूद्र को देखा और बोले "इस झील के बारे में अनेक पौराणिक कहानियां है; पर मैं तुम्हें दो प्रमुख प्रचलित कहानियां ही सुनाऊंगा।

"रुद्र क्या तुमने कभी सुना है की महाभारत कालीन पांडव पुत्र युधिष्ठिर सशरीर स्वर्ग गए थे !"

"नहीं, मैं इस विषय में ज्यादा नहीं जानता हूं।"

"तो सुनो रुद्र यह वही जगह है, जहां से स्वयं देवराज इंद्र ने अपने रथ में बिठाकर युधिष्ठिर को सह शरीर स्वर्ग ले गए थे !"

"क्या ! सच में सशरीर ?"

"हां, कहते हैं कि भगवान श्री कृष्ण के बैकुंठ पधारने के पश्चात महर्षि वेदव्यास की सलाह मानकर पांडवों ने राजपाट त्याग कर से शरीर स्वर्ग जाने का निश्चय किया। महाराज परीक्षित को उत्तराधिकारी घोषित कर पांडव और उनकी पत्नी द्रौपदी अपनी इस यात्रा पर निकल पड़े। अनेक तीर्थों, नदियों, समुद्रों, वनों तथा पहाड़ों की यात्रा करते हुए पांडव हिमालय पहुंचे। फिर वहां से वे सुमेरु पर्वत तक पहुंचे। जहां पर सबसे पहले द्रौपदी की मृत्यु हुई और फिर एक-एक कर पांडू भाइयों की मृत्यु हुई और वे स्वर्ग पहुंचे। केवल

युधिष्ठिर ही इस झील के पास पहुंचे और कहते हैं कि देवराज इंद्र स्वयं उनके लिए अपना रथ लेकर आए थे और उनको सशरीर स्वर्ग ले गए।

रुद्र, मकरंद को अभी भी ऐसा देख रहा था, जैसे कहानी अभी खत्म नहीं हुई हो। कुछ देर तक यूं ही मूड दर्शक बने रहने के बाद रूद्र ने कहा "वाकई बहुत रोचक है ! और दूसरी कहानी क्या है, बाबा ?"

"जरूर बताऊंगा, पर पहले हमें वापस अपने कुटिया के पास चलना चाहिए; शायद तुम्हें भूख लगी होगी !" मकरंद ने रूद्र को चलने के लिए हाथ से इशारा किया। और वह दोनों अपने डेरे की तरफ चलने लगे।

"रुद्र ! अब मैं तुम्हें दूसरी कहानी बताता हूं। पर इससे पहले मैं तुम्हें एक बात और बताना चाहूंगा कि यहां से बस थोड़ी ही दूर पर ऐसी ही एक और पवित्र झील है, जिसका नाम सूरज ताल है। और यह दोनों झीले एक ही कहानी से बंधी हुई है, और तुम तीन दिन पहले हमें उसी झील में मिले थे।"

"कहते हैं कि चंद्रमा की बेटी चंद्रा और सूर्य के पुत्र भागा मैं गहरा प्यार था। पर उनका प्यार अधूरा था क्योंकि उनके माता-पिता से इसकी अनुमति नहीं थी। काफी समय तक एक दूसरे से दूर रहने के पश्चात उन्होंने हमेशा हमेशा के लिए एक साथ रहने की योजना बनाई। इसलिए टूटे दिलों को जोड़ने तथा अनंत काल तक साथ रहने के लिए वे बारापाचा ला में मिले और शादी की योजना बनाई।

दुर्भाग्य से चंद्रा धागा से पहले ही अपने निर्धारित स्थान पर पहुंच गई। वह फिर अपने प्रेमी की तलाश में कुंजुम दर्र की यात्रा की और फिर से वापस बारापाचा ला की परिक्रमा की। जब वह उसे खोजते हुए दांडी गांव पहुंची तब उसने भागा को अपनी तरफ आते हुए देखा। फिर उनका मिलन हुआ और एक खगोलीय विवाह संपन्न हुआ। जिससे वर्तमान की चंद्रभागा नदी का निर्माण हुआ। इसलिए वर्तमान में यह दोनों झीलें चंद्रताल चंद्रा की और सूरज ताल भागा के अटूट प्रेम को दर्शाती है।"

रुद्र ने सिर्फ अपने चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कुराहट दिखाई पर, कुछ ना कहा। मकरंद ने वापस कहना शुरू किया "रुद्र ! आज के वैज्ञानिक दृष्टि से देखने वाले यह भी कहते हैं कि इस झील का आकार चंद्रमा के समान हैं, इसलिए इसे चंद्रताल के नाम से जानते हैं। पर जो भी कहानी हो पर, इस पवित्र झील में आज भी ऐसे अनेक रहस्य है, जिनका जवाब आज तक कोई ढूंढ नहीं पाया है।

"कैसे रहस्य बाबा ?" रूद्र ने उत्साह से झील को सुदूर तक देखते हुए मकरंद से पूछा।

"बताता हूं ! " वृद्ध मकरंद ने अपनी लंगोटी को ठीक करते हुए कहा।

"रुद्र ! यह तो तुम जानते ही होगे कि किसी तालाब या झील में पानी लाने के लिए नदियां, नाले या नहरें होती हैं।"

"हां बाबा ! " रूद्र ने जवाब दिया।

"तो सुनो रूद्र ! आज तक यह कोई नहीं जान पाया कि इस झील में पानी कहां से आता है। कोई नहर, नदी या जलधारा इस झील में नहीं मिलती है। फिर भी यह झील कभी नहीं सूखती है। इसमें जल की मात्रा भी पूरे वर्ष लगभग एक से रहती है, जबकि तुम देखोगे कि इस झील से कई छोटी-छोटी धाराओं से पानी बाहर जाता रहता है, फिर भी पानी कभी कम नहीं होता है।

"वाकई यह रोमांचक है, पर बाबा आखिर यह पानी कहीं से तो आता होगा ?" रूद्र ने विस्मित होकर पूछा।

"कोई पूरी तरह से नहीं जानता है रूद्र ! पर कुछ लोगों का मानना है कि इस झील के नीचे ही कोई पानी का स्रोत है, जिससे पानी निरंतर आता रहता है। इसीलिए लगातार इन छोटी छोटी नदियों द्वारा पानी निकालने के बाद भी यहां पानी कम नहीं होता है।" यह कह कर मकरंद रुद्र की तरफ मुड़ कर चुप हो गए और रुद्र के अगले प्रश्न का इंतजार करने।

पर रुद्र ने मकरंद की तरफ देखा तक नहीं। वह अभी भी लगातार उसी झील को घूरे जा रहा था। काफी देर तक झील को एक टकी से देखने के बाद रूद्र ने झील की तरफ इशारा करते हुए मकरंद से कहा "और वह क्या है; बाबा ! शायद कोई टापू ?"

"हां, वह एक टापू ही है। और इसका भी एक अनसुलझा रहस्य है।"

"एक और रहस्य ! और वह क्या है ?"

"यही कि यह झील ज्यादा गहरी नहीं है, फिर भी आज तक कोई उस टापू पर नहीं पहुंच पाया है। स्थानीय लोग इसे समुद्र टापू या समुंदरी टापू के नाम से जानते हैं। यह भूरे रंग का टापू गर्मियों के मौसम में और भी सुंदर लगता है। जब गर्मी के मौसम में यहां से बर्फ पिघलती है, तो वहां सुंदर चमकीले जंगली फूल उग आते हैं, जो दूर से देखने पर तारों की तरह झिलमिलाते हुए दिखाई देते हैं।"

लगभग एक घड़ी तक बातें करने के बाद वो दोनों वापस अपने अस्थाई निवास के पास लौट आए। फटे पुराने वस्त्रों से बनी ये कुटिया केवल कुछ औषधियों तथा भोजन सामग्री रखने के ही काम आती है। कुटिया के कोने में एक पत्थर की सिला पर लकडी की एक भगवान महाकाल की प्रतिमा लगी हुई है। अभी सूर्य को उगे हुए एक घड़ी बीत चुकी है। सभी अगोरी सुबह का स्नान तथा शिव आराधना करने के पश्चात अपने-अपने कामों में व्यस्त थे।

मोटी तोंद वाला कौस्तुभ उनकी तरफ भागा चला आ रहा था। तेज चलते हुए उसकी तोंद और पूरा शरीर ऐसे हिल रही थी मानो कोई मदमस्त हाथी खुले जंगल में गड़गड़ाहट करते हुए दौड़ रहा हो। उसने पास आकर मकरंद को प्रणाम किया और रुद्र की तरफ मुड़कर अपनी मोटी मोटी आंखों को और चौड़ा करके बोला

"रूद्र भैया ! आज नाश्ते में पहाड़ी खरगोश का गोश्त बना है। खाओगे !"

"क्या पहाड़ी खरगोश ? क्या आप साधु भी मांसाहारी खाना खाते हो?" रुद्र ने आश्चर्य से पूछा।

मकरंद मुस्कुराए और बोले "यह समय और जगह पर निर्भर करता है कि हम क्या खाएं। वैसे भी जीव जीवस्य भोजनम!"

रूद्र और मकरंद एक दूसरे की तरफ देख कर मुस्कुराए और इस लजीज नाश्ते का आनंद लेने के लिए मन ही मन में हामी भर ली।

"क्या इस पहाड़ी खरगोश को तुमने पकड़ा है, कौस्तुभ ? मैंने सुना वो बहुत तेज भागते हैं !" रुद्र ने मजे लेने के लिए कौस्तुभ को छेड़ा।

"हां ! हां ! मेरी मदद के बिना अथर्व इसे कभी नहीं पकड़ पाता।" कौस्तुभ ने अपनी मोटी तोंद को अंदर खींचते हुए कहा। "वाकई में तुम बहुत ही होशियार और ताकतवर हो मेरे दोस्त।" रुद्र ने जोर से हंसते हुए, कौस्तुभ की पीठ पर एक मुक्का जमाते हुए कहा।

"क्या आप को मुझ पर यकीन नहीं है।" कौस्तुभ ने भोला सा मुंह बनाते हुए कहा।

"नहीं, नहीं ! मुझे तुम्हारी प्रतिभा और ताकत पर पूरा भरोसा है l शायद किसी दिन तुम मुझे पहाड़ी तेंदुआ का भी नाश्ता खिलाओगे" रूद्र ने फिर से कौस्तुभ को छेड़ा।

"नहीं रूद्र भैया ! अब आप हमारा मजाक बना रहे हो। हम कल ही आपको अपने साथ लेकर जाएंगे और खरगोश पकड़ कर दिखाएंगे।" कौस्तुभ ने लगभग रोते हुए कहा।

"नहीं मुझे पूरा यकीन है कि एक दिन तुम जरूर खरगोश को पकड़ोगे। " रूद्र ने एक बार फिर से कौस्तुभ की पीठ पर हाथ जमाया।

9.
The Morning Hunt

सूरज ताल झील, 2014

रूद्र को इन शिव भक्तों के साथ रहते हुए लगभग एक महीना हो चला था। वह धीरे-धीरे इन के तौर तरीके सीख रहा था। सब साधु भी उसे उसे पसंद करने लगे। वे सभी अपने-अपने तरीकों से रूद्र को प्रभावित करने की कोशिश करते थे। जैसे अंकुश उसे मल युद्ध में अपनी ताकत दिखाता था, तो अथर्व कई मिनटों तक अपनी सांस रोक कर अपनी योग शक्ति से अचंभित करता था। पर इन सब में से जो सबसे ज्यादा रूद्र को प्रभावित कर पाया, वह था कौस्तुभ। कौस्तुभ की हंसी रूद्र को बहुत अच्छी लगने लगी थी।

जब भी कौस्तुभ जोर-जोर से हंसता था, तो उसके चेहरे से ज्यादा उसकी तोंद खिलखिलाती थी1 हंसते हुए उसकी तोंद महासागर में डोलते किसी जहाज की तरह लगती थी। कई बार तो हंसते हुए उसकी तोंद, उसके शरीर का संतुलन बिगाड़ देती थी और वह जमीन पर गिर जाता था। पर उसका हंसना तब तक बंद नहीं होता था, जब तक या तो स्वयं मकरंद वहां आकर उससे डांटे या फिर सभी लोग उसे अकेला छोड़ कर निकल जाते थे। पर रुद्र के लिए तो यही सबसे बड़ा मजेदार पल होता था। वह वहां पर बैठकर तब तक खुद हंसता रहता था, जब तक उसका पेट उसे रुला नहीं देता। कौस्तुभ उसे नाना प्रकार की अपने मोटे पेट के साथ जुड़ी कहानियों को बड़े उत्साह से उसे सुनाता था।

रुद्र अब धीरे-धीरे इन संतो में रम चुका था। अब वह भी उनकी तरह शिव भक्ति तथा दूसरे कर्मों में व्यस्त होने लगा। पर कभी-कभी जब वह उनके साथ बैठकर हुक्का का आनंद ले रहा होता था, तब जोर से खांस पड़ता था। ऐसा होने पर अंकुश इस मौके का पूरा फायदा उठा था और रुद्र कि पीठ पर धोंस जमाते हुए कहता था "चिंता मत करो दोस्त ! तुम जल्दी ही सीख जाओगे।" इस पर रुद्र भी थोड़ा सा शर्मा जाता था।

अंकुश अपनी विशाल कद काठी से एक साधु जैसा न लगकर योद्धा सा प्रतीत होता था। लंबी और मांसल भुजाएं, विशाल व कठोर छाती, सामान्य से लंबा कद, रंग एकदम गोर वर्ण। उसके लंबे और घुंघराले बालों से बनाया हुआ विशाल जुड़ा उसके सिर पर बड़ा आकर्षक लगता था। गले में अनेक रुद्राक्ष के माला हैं एवं पीले रंग की मोटी सी जनेऊ काफी आकर्षक लगती थी। उसके भारी-भरकम कंधों पर हमेशा उसी की तरह विशाल और भारी फरसा हमेशा लटका रहता था। उसने साधना, तपस्या और अथक

कसरत से अपने शरीर को दिव्य बना रखा था। सुंदरता में वह स्वयं महादेव सा प्रतीत होता था।

आज रुद्र जल्दी ही उठ गया था, क्योंकि कौस्तुभ और अंकुश आज उसे अपने साथ शिकार पर ले जाने वाले थे। अभी काफी अंधेरा था। रूद्र, कौस्तुभ और अंकुश को छोड़कर बाकी सभी अभी सो रहे थे। अपने अस्थाई निवास से लगभग तीन कोस दूर निकल कर वे निचली घाटी की तरफ जा रहे थे। जहां पर घास और पेड़ों की संख्या ज्यादा थी। शिकार के लिए अंकुश ने हथियार के तौर पर एक त्रिशूल नुमा भाला ले रखा था। कौस्तुभ के हाथ में एक बड़ी सी गुलेल थी, जबकि रुद्र के हाथ में सिर्फ एक लंबी लाठी।

वे घास के मोटे तिनकों को रोंदते हुए आगे बढ़ रहे थे। यद्यपि अभी काफी अंधेरा था, पर अंकुश और कौस्तुभ को इस जगह का लगभग 2 महीने का अनुभव था। इसलिए उन्हें आगे बढ़ने में कोई दिक्कत नहीं हो रही थी। खासकर; अंकुश को तो उनके समूह का पालनहार तथा पहरेदार भी कहा जाता था। अंकुश इन अघोरी में से सबसे ज्यादा ताकतवर था। इसीलिए ज्यादातर वही इस प्रकार के कार्यों का नेतृत्व करता था। अब वे अपने गंतव्य के करीब थे।

खरगोश का शिकार सूर्योदय व सूर्यास्त के समय ज्यादा किया जाता है, क्योंकि इस समय वे ज्यादा सक्रिय होते हैं। खरगोश का शिकार हिरण के शिकार के बिल्कुल विपरीत होता है। जहां हिरन के शिकार में बिल्कुल शांत रहने की आवश्यकता होती है, वहीं से खरगोश के शिकार के समय उन्हें आवाज से डराना होता है। बर्फ में बने खरगोशों के ताजा पैरों के निशान को तलाशते हुए, वे आगे बढ़ रहे थे। थोड़ी दूर आगे निकलने के बाद उनको चीड के पेड़ों के पास उनके बिल दिखाई दिए।

वैसे खरगोश इतने भोले और नटखट होते हैं कि, शायद ही कोई उनका शिकार करना चाहे। आखिर खरगोश एक छोटा सा जानवर है, जिसके पास न तो कोई नाखून, ना मजबूत पंजे और न ही नुकीले दांत। बस भागना ही उनका मुख्य रणकौशल हैं। बिना भागे वह शिकारी आदमियों, जंगली कुत्तों या अन्य खूंखार जानवरों से अपनी रक्षा कैसे करें। आखिर शिव के मस्तक पर भी चंद्रमा स्थित है तथा चंद्र के अंश में ही शश हैं। इसलिए चंद्रमा का दूसरा नाम भी है शशांक। पर अभी उनकी यह मजबूरी थी। आखिर ' जीव जीवश्य भोजनम *!'*

अपने लक्ष्य पर ध्यान लगाए वो तीनों योद्धा उन बिलों से दस हाथ दूरी पर सही मौके के इंतजार में बैठे थे। पिछली आधी घड़ी से वो तीनों अपनी जगह पर ही फुसफुसाहट कर रहे थे। वे उस हल्के उजाले में खरगोशों की चमकने वाली आंखों को ढूंढ रहे थे। अब लगभग उजाला हो चुका था, हर चीज साफ दिखाई दे रही थी। आखिर वह मौका आया जब कुछ खरगोश अपने बिलों से बाहर निकले। उनको देखते ही कौस्तुभ चिल्ला उठा "पकड़ो ! वह रहा हमारा स्वादिष्ट नाश्ता।"

रुद्र और अंकुश दोनों बिलों की तरफ दौड़ पड़े। रुद्र ने अपनी लाठी को जोर से घुमाया और एक खरगोश को लक्ष्य बनाते हुए फेंका। पर सतर्क और होशियार खरगोश कुलांचे भरते हुए भाग निकला। इसी प्रकार अंकुश का वार भी खाली निकल गया। वे दोनों एक ही खरगोश के पीछे दौड़ पड़े। कौस्तुभ भी उनके पीछे जाने लगा। अब तो वो तीनों हो हल्ला करते हुए, एक ही खरगोश के पीछे पड़ गए। वे अब दिशाहीन होकर कभी दाएं तो कभी बाय, लगातार उस छोटे से जानवर के पीछे भागे ही जा रहे थे। रुद्र और अंकुश उस जानवर का पीछा करते हुए काफी आगे निकल गए थे और कौस्तुभ अभी भी धीरे धीरे उनके पीछे-पीछे चला आ रहा था।

वह खरगोश भी हार नहीं मानने वाला था। वह लगातार इन योद्धाओं को अपने पीछे दौड़ा रहा था। दौड़ते दौड़ते कभी वह किसी पत्थर या घास की ओट में छुप जाता था तो रुद्र और अंकुश चिल्ला चिल्ला कर वापस भागने को मजबूर कर देते थे। काफी देर तक यह दौड़ भाग चलती रही पर किसी को कुछ हासिल ना हुआ। हर बार वह नटखट खरगोश बहुत करीब आने पर भी बच निकल जाता था। शायद उसे आज नहीं मरना था। शायद आज इन शिकारी के लिए यह शिकार निश्चित नहीं था। शायद कोई और शिकार इन शिकारियों की प्रतीक्षा में था।

इस दौड़ भाग में रुद्र और अंकुश इतने व्यस्त थे कि उन्हें काफी देर से दूर से आ रही आवाज भी सुनाई नहीं दे रही थी। शायद उन्हें कोई पुकार रहा था। अंकुश ने रुक कर उस आवाज को सुनने की कोशिश की। थोड़ा ध्यान से सुनने पर वह समझ गया कि यह कौस्तुभ की आवाज थी। उसने रुद्र को चिल्ला कर रुकने को कहा। रुद्र ने भी ध्यान देकर वह आवाज सुनी। रुद्र साफ-साफ सुन सकता था कि वह आवाज कौस्तुभ की ही थी और शायद वह मदद के लिए चिल्ला रहा था।

"रुद्र !! अंकुश !!! मदद करो !"

अब वह आवाज बिल्कुल साफ सुनाई दे रही थी। यह कौस्तुभ ही था। उसकी आवाज में डर था। रुद्र और अंकुश ने अपने शिकार का पीछा छोड़ा और कौस्तुभ की तरफ दौड़ पड़े। कौस्तुभ की आवाज अब और पास से सुनाई दे रही थी। वह लगातार चिल्लाए जा रहा था। कुछ ही पलों में उन्हें कौस्तुभ दिखाई पड़ा। वह जड़ सा खड़ा हुआ कांप रहा था।

रुद्र ने दूर से ही चिल्ला कर पूछा "क्या हुआ कौस्तुभ ?"

"क्या हुआ ?" अंकुश भी चिल्लाया। पर कौस्तुभ जड़वत खड़ा रहा। वह भय से कांप रहा था। उसकी आंखें फटी सी कहीं पर टिकी हुई थी। कौस्तुभ को जवाब ना देता देख रुद्र और अंकुश ने उस तरफ देखने की कोशिश की जिस और कौस्तुभ अंगुली से इशारा कर रहा था। उस दृश्य की झलक मात्र को पाते ही देखते ही रुद्र और अंकुश भी ढूंढ से बन गए।

सामने थी साक्षात मौत ! बर्फ से आच्छादित छोटी सी चट्टान पर बैठा बिल्कुल बर्फ के रंग जैसा ही हिम तेंदुआ ! सफेद रंग के कारण इसे देख पाना भी दुर्लभ सा था पर उसकी हीरे सी चमकती आंखें आराम से दिखाई दे रही थी। लगभग 4 फुट 3 इंच का यह हिम तेंदुआ इन लोगों से लगभग बीस हाथ की दूरी पर था, जो वह इस दूरी को दो छलांग में ही पूरी कर सकता है। ताजा मांस खाने को लालायित, वह ऐसे आराम से चट्टान पर बैठा था, जैसे उसे कोई चिंता नहीं कि ये तीन इंसान कितना ही चिल्लाए चीखे; उसे कुछ फर्क नहीं पड़ता। वह तो अपने सफेद शरीर पर बने भूरे व काले धब्बों को चाटने में व्यस्त था तथा कभी-कभी हल्की सी गुर्राहट कर रहा था।

कुछ पल यूं ही मूर्ति बने रहने के बाद रूद्र ने होश संभाला और कौस्तुभ का हाथ पकड़कर वहां से खिसकने का इशारा किया। जैसे ही वो वहां से जाने के लिए मुड़े, वह हिम तेंदुआ भी एक भयानक गुर्राहट के साथ उठ खड़ा हुआ। उसकी गुर्राहट भर से उनमें सिरहन सी दौड़ गई और वो तीनों फिर से जड़वत हो गए। आए तो थे वे शिकार करने पर, अब खुद ही शिकार बनने वाले थे। हिम तेंदुए ने एक हल्की से छलांग लगाई और चट्टान से नीचे आ कर अपनी गर्दन को ऐसे मरोड़ा, जैसे शायद वह इन शिकारियों की गर्दनें ऐसे ही मरोड़ने वाला था। उसने एक बार जोर से अंगड़ाई ली और हल्के से अपने कदम शिकार की तरफ बढ़ा दिए।

रुद्र ने अंकुश से उसका भाला लेते हुए कहा "तुम कौस्तुभ को ले कर यहां से निकलो !"

"नहीं !" अंकुश ने धीमी आवाज में पर पूरी दृढ़ता से जवाब दिया।

"मैं कहता हूं जल्दी निकलो ! इसे मैं देख लूंगा।" कहकर रूद्र ने कौस्तुभ को पीछे की तरफ धकेला और खुद दो कदम तेंदुए की तरफ आगे बढ़ गया। पर अंकुश वहीं खड़ा रहा। रूद् ने फिर से अंकुश को पीछे हटने का इशारा किया। अंकुश ने अनमने मन से रुद्र की बात मानकर थोड़ा सा पीछे हटा।

कौस्तुभ और अंकुश के पीछे हटने पर भी उस हिम तेंदुए ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वह तो ताजा मांस का आदी था। आज उसके लिए एक इंसान ही काफी था। आज उसके लिए रुद्र ही काफी था। वह इंसानों की तरह कल की चिंता नहीं करता। वह तो जानता था की कल वह नया शिकार ढूंढेगा। एकदम नया। एकदम ताजा। किसी और का!

हिम तेंदुए ने कुछ कदम और बढ़ाएं फिर उसने रुक कर अपने सामने खड़े लजीज शिकार की आंखों में झांकने लगा। रूद्र भी अब स्थिर हो चुका था। उसे कोई कंपन नहीं हो रही थी। शायद कोई डर भी नहीं। वह अपनी जगह दृढ़ खड़ा था। उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कुराहट थी। वह भी तेंदुए की आंखों में आंखें डाल कर शायद मन ही मन कह रहा था, आया तो था अपने नाश्ते का जुगाड़ करने पर शायद अब तुम्हारी वजह से हमारा दोपहर का भोजन भी एक साथ बन जाएगा।

कुछ क्षण यूं ही एक दूसरे की आंखों में झांकने के पश्चात तेंदुए ने एक बार फिर से गुर्राहट की। शायद वह रुद्र से कह रहा था की यह तुम्हारा आखिरी पल है, इसके बाद तुम मेरे भोजन बनने वाले हो। रूद्र ने भी अपनी आंखें सीकोड़ी और अपने भाले को मजबूती से पकड़ा और आंखों ही आंखों में तेंदुए को जवाब दिया, शायद कुछ पल बाद, मै तुम्हें बड़े चाव से आग में पका कर खा रहा हूंगा।

एक दो कदम और आगे बढ़ाने के बाद वह तेंदुआ फिर से ठिठका। शायद वह भी यह जान लेना चाहता था की क्या यही उसका आज का शिकार था ! 6 फुट से भी ज्यादा लंबी और हष्ट पुष्ट रूद्र की काया उसे संकोच में डाल रही थी। रूद्र भी अपनी जगह पर जमा रहा। बस, उसे ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। वह पल आ गया था। एक जोरदार, हृदय को कंपा देने वाली गुर्राहट के साथ उस हिम तेंदुए ने लगभग 6 हाथ की दूरी से रूद्र पर छलांग लगा दी।

रूद्र तैयार था। वह हिम तेंदुआ अपने अनुमान के हिसाब से बिल्कुल सही जगह पर पहुंचा, बिल्कुल रुद्र की चौड़ी छाती पर। पंजे एकदम रुद्र के गले पर। वह रुद्र के साथ जमीन पर गिरा। उसके तीखे पंजो ने रुद्र के गले से कुछ खून बहाया, पर वह वापस खड़ा ना हो सका। वह त्रिशूलनूमा भाला तेंदुए के हृदय को चीरता हुआ उसके शरीर के आर पार था। वह बिना किसी गुर्राहट के रुद्र के सीने पर पड़ा था l बिल्कुल शांत! वह अब शिकार बन चुका था, रुद्र का शिकार!

10.
अलौकिक नृत्य

Foothills of Mount Trishul, 2018

सूर्य की किरणें अब निस्तेज होकर केवल पहाड़ों व शिखरों को ही चमका रही थी। मैदानी हिस्सों में प्रकाश ने के बराबर था। हिमाच्छादित हिमाद्री के अपूर्व सौंदर्य को अंधकार ने धीरे-धीरे अपने आवरण में लेना शुरू कर दिया था। इस विशुद्ध प्रकृति के सौंदर्य की छटा अंधेरे में समा रही थी। फिर भी उस पहाड़ी मैदान का वातावरण एकदम सुगंधित व आनंदित था। अपनी अस्थाई कुटिया से कुछ ही दूर रुद्र एक सिलासन पर बैठा, प्रकृति के इन्हीं दृश्यों में खोया हुआ था।

लगभग 6 वर्ष के इस नए जीवन में रुद्र पूरी तरह बदल चुका था। अब शायद ही कोई उसे पहचान पाता हो। वह पूर्ण रूप से एक साधु के रूप में ढल चुका था। मकरंद और दूसरे साधुओ व सन्यासियों के संपर्क में रहकर वह स्वयं एक सन्यासी सा बन गया था। पर सन्यासी होने के साथ वह एक बलशाली योद्धा भी था। उसके विशाल और तेजमय ललाट पर चंदन से बना त्रिपुंड, कमर से भी नीचे तक लटकती भारी जटाजूट, गले व हाथों में असंख्य रुद्राक्ष की मालाएं उसको एक दिव्य रूप प्रदान करती थी। उसका अत्यंत तेजस्वी मुख्य मंडल, बड़ी-बड़ी नीली आंखें, मजबूत और उभरे हुए चौड़े कंधे और पूरे शरीर पर लगी हुई अभिमंत्रित भभूति उसे अन्य साधुओ से हटकर उसकी अलग ही पहचान बनाती थी।

उसने मकरंद से हर प्रकार का ज्ञान प्राप्त किया था। वह जप, तप, तंत्र, शास्त्र, ज्ञान, युद्ध कला व व्यावहारिक जीवन में निपुण था। पिछले 6 वर्षों में वह पूरे हिमालय तथा अन्य कई स्थानों पर भ्रमण कर चुका था। वह अभी तक कई बड़े तपस्वीयों, साधुओं, तांत्रिकों, सन्यासियों व सिद्धि प्राप्त साधकों से मिल चुका था। साथ ही अंकुश ने उसे शस्त्र संचालन में भी निपुण बना दिया था। यद्यपि ये साधु कोई योद्धा नहीं थे फिर भी उन्हें शस्त्र संचालन में बड़ी दक्षता थी। उन्हें मल्ल युद्ध तथा शस्त्र संचालन में विशेष आनंद प्राप्त होता था। अंकुश ने उसे अपनी ही तरह फरसा चलाने में निपुण बना दिया था।

रूद्र को प्रकृति को इसी तरह निहारते हुए रात्रि का प्रथम प्रहर हो चला था। आसमान साफ था। चांद ने अपनी रोशनी से पहाड़ों व शिखरों को चमका दिया था। रुद्र की तंद्रा तब टूटी जब अथर्व ने उसके कंधे पर हाथ रखा। रुद्र उठकर खड़ा हुआ और अथर्व के बिना कुछ कहे ही उसके साथ कुटिया की तरफ चल पड़ा।

जमीन से 3 गज ऊंची उस विशाल धूनी में लकड़ियां धड़क रही थी। उसके पास में ही मकरंद एक बड़े शिलाखंड पर बैठे हुए हुक्का पी रहे थे। और धूनी के दूसरी तरफ मल्लयुद्ध का अभ्यास हो रहा था। अभी जन्मेजय और अंकुश मैदान में एक दूसरे से भिड़े हुए थे। जन्मेजय भी शारीरिक बल में अंकुश के बराबर ही था। उस शीतल चांदनी रात में वे दोनों दो विशाल भेड़ियों से ही प्रतीत हो रहे थे।

रूद्र ने एक दृष्टि उन दोनों की तरफ डाली और फिर मुड़कर मकरंद की तरफ कदम बढ़ाया। पास आने पर मकरंद ने अपना हुक्का रूद्र को पकड़ाते हुए मैदान की तरफ इशारा किया। रूद्र ने कुटिल मुस्कुराहट से अंकुश की तरफ देखते हुए हुक्के का एक जोरदार कस लिया। उसने हुक्का वापस मकरंद को पकड़ाया और मैदान की तरफ चल दिया।

रुद्र के आने के बाद इन साधुओं के समूह में अंकुश का महत्व जरूर घट गया था। जो दायित्व पहले अंकुश अकेला निभाता था, वह अब इन दोनों में बंट चुका था। इसीलिए अंकुश को रूद्र से नफरत तो न थी फिर भी कहीं ना कहीं उससे इर्ष्या जरूर थी। और अंकुश इसी प्रकार की शाम का इंतजार करता था जब वह अपनी जलन को मल्लयुद्ध के बहाने से मिटा पाता था।

रुद्र ने अंकुश के पास पहुंच कर एक जोरदार अंगड़ाई ली। अपनी गर्दन को दाएं बाएं घुमाया। और कातर दृष्टि से अंकुश को मल्लयुद्ध का न्योता दिया। अंकुश ने भी पल भर भी इंतजार नहीं किया और रुद्र की टांग पकड़ने के लिए छपटा। रूद्र ने तड़ित गति से अपने आपको दो कदम पीछे उछाल कर अंकुश के इस दांव से बचाया।

रूद्र ने अपनी खुली जटाओं का जूड़ा बनाया और उन्हें रुद्राक्ष की माला से बांधा। फिर सिंह सी गर्वीली चाल चलते हुए अंकुश के पास पहुंचा। दोनों ने एक दूसरे की आंखों में देखा और मुस्कुराकर अभिवादन किया। फिर दोनों ने अपनी ताल ठोक कर एक दूसरे को चुनौती दी।

बस पल भर में ही वो दोनों एक दूसरे से भिड़ गए। वे कंधों को कंधों से भिड़ा कर एक दूसरे को पटकने की भरपूर कोशिश करने लगे। कभी वे कमर को तो कभी गर्दन को पकड़ कर एक दूसरे को बांध लेने की कोशिश करते। दोनों एक दूसरे से कम ना थे। कभी रुद्र अंकुश को जमीन पर पटकता तो कभी अंकुश रूद्र को। जमीन पर गिरने पर वापस खड़े होकर वे दोनों एक दूसरे को ताल ठोक कर चुनौती देते और फिर से गुत्थम गुथा हो जाते।

उन दोनों को देखकर ऐसा लगता था जैसे दो मदमस्त हाथी तालाब में मस्ती कर रहे हो। वे लगातार दांवपेच लगा कर एक दूसरे को पटकने में लगे हुए थे। कभी रुद्र की का पलड़ा भारी होता तो कभी अंकुश का। उन दोनों में से कोई भी कभी नहीं हारता था। यह

सब तब तक चलता रहता था, जब तक कि दोनों थकान से बेहोश जैसे ना हो जाते थे। आज भी यही हुआ। उनका मल्लयुद्ध अनिर्णीत रहा। वे दोनों थक कर वापस रेंगते हुए धूनी के पास आकर लेट गए।

अथर्व ने मंद होती धूनी में सूखी लकड़ियां डाली और धूनी एक बार फिर से धधक उठी। कौस्तुभ ने धूनी से गर्म भभूति निकाली और अपने शरीर पर मली। फिर उसने अपना चिमटा उठाया और मंद गति से नृत्य करने लगा। उसका मोटा और थुल थूला शरीर नाचते हुए यहां वहां से हिल रहा था। कौस्तुभ को देखकर किरंत, अथर्व, अर्थ आदि ने भी धीरे-धीरे नाचना शुरू कर दिया। अर्थ ने नाचते हुए अपना डमरू उठाया और उसे मधुर ताल में बजाने लगा। धीरे धीरे बाकी सब साधुओं ने भी अर्थ का अनुसरण किया। कोई चिमटा बजा रहा था, तो कोई शंख, तो कोई थाल। धीरे धीरे उनका नृत्य संगीतमय व ताल के साथ हो रहा था।

वहां अब केवल वृद्ध मकरंद और थके हुए रूद्र तथा अंकुश ही बैठे थे। पर उनका शरीर भी रोमांच से भर रहा था। उनके अंग अपने आप नाचने के लिए फड़कने लगे। वे दोनों एक झटके में उठे, धूनी से गर्म भभूति को लेकर अपने ऊपर उछाला और नृत्य में कूद गए। वहां पर मौजूद हर एक साधु उस अलौकिक नृत्य में तब तक डूबा रहा जब तक की वह पूर्ण रुप से थक कर जमीन पर लुढ़क ना गया हो।

वहां अब केवल रुद्र ही नृत्य कर रहा था। बाकी साधु डमरू, चिमटे, थाल इत्यादि बजाकर उसे उत्साहित कर रहे थे। रुद्र ने अपनी जटाओं को खोल दिया था। अब वह मदमस्त हाथी सा झूमते हुए धूनी के चारों और गोल गोल चक्कर लगाते हुए नृत्य कर रहा था। रुद्र का नृत्य दिव्य, अद्भुत और लोक विस्मयकारी था। नृत्य करते हुए रुद्र का हर अंग व मुख भाव एक दूसरे से तालमेल बिठा रहे थे। वह मकरंद द्वारा सिखाए गए इस नृत्य में सृजन, विनाश, संरक्षण, मोक्ष और भ्रम आदि सिद्धांतों की अभिव्यक्ति कर रहा था। उसके एक हाथ में डमरू तो दूसरे में त्रिशूल था। वह बिल्कुल महादेव की भांति ही आनंद तांडव कर रहा था। नटराज जैसा ही!

11.
Karma will follow You

Somewhere in Himalaya, 2019

पिछले इन 6 वर्षों में रुद्र ने अपनी एक अलग ही पहचान बना ली थी। वह अब लगभग सभी साधु संतों के संगठनों व आश्रमों में सम्मान पाता था। इस अवधि के दौरान उसने अनेक आध्यात्मिक चिंतकों, वेद वेदांग के ज्ञाताओं, पुराणों के मर्मज्ञ, अनेक कथावाचकों, वानप्रस्थ जीवीयों व कहीं महान तपस्वी से समागम करते हुए उसने उसने हिमालय के सैकड़ों रहस्यमई तीर्थों, वनों, सरोवरों, नदियों, गुफाओं, तलहटीयों व दूरदराज दुर्गम जगहों पर बसे गांव व साधुओं के आश्रमों का भ्रमण कर चुका था। इन सब के प्रभाव से रूद्र अब एक प्रखांड विद्वान व योद्धा बन चुका था। निद्रा, आलस्य, भय, क्रोध आदि दोषों से मुक्त था। उसके चेहरे पर अब हमेशा एक ही तरह की हल्की मुस्कुराहट रहती थी।

वह अपने साथी साधुओं के समूह में सबसे पहले ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर पुष्पों, गंध आदि से अपने आराध्य महादेव की आराधना करता था। फिर अपने गुरु मकरंद को दधि, अक्षत, पुष्प, फल आदि के द्वारा उनकी पूजा करता था। वह शास्त्रों के साथ शस्त्रों में भी प्रवीण था। साधु संतों के साथ होते हुए भी वह प्रतिदिन बाघ, रीछ, मृग, सिंह, भैंसे आदि भयानक जंगली पशुओं के शिकार पर जाता था। कसरत और योग साधना से उसका शरीर अब और भी ज्यादा सौंदर्य युक्त और मजबूत हो चला था। उसका बदन अब पूर्णिमा के निर्मल चंद्रमा सा शीतल पर लोह सा मजबूत भी था। वह अब बुद्धि, शास्त्रज्ञान और शस्त्रज्ञान में कोई उसका सानी ना था।

हमेशा की तरह खूबसूरत और सुहानी उस सुबह के वक्त हल्का सा उजाला ही था, जब मकरंद अपने स्नान-तर्पण करके वापस अपने अस्थाई आश्रम की तरफ लौट रहे थे। उन्होंने कुछ ध्वनियां सुनी। जब उन्होंने ध्यानमग्न होकर उन स्वरों की तरफ ध्यान लगाया तो उन्हें महामृत्युंजय मंत्र के जाप के स्वर सुनाई दिए। मकरंद ने अपने गंतव्य आश्रम का रास्ता छोड़ा और अपने कदम उस मधुर ध्वनि की तरफ बढ़ा दिए। थोड़ा आगे बढ़ने पर उनको उस शक्तिशाली मंत्र के स्वर और भी साफ सुनाई दे रहे थे। उनका कौतूहल और बढ़ गया था। वे उन शुरु के मुंह पास में बंद कर अभिराम भाव से आगे बढ़ते रहें वह आश्चर्य में थे कि इतनी खूबसूरत तरीके से इन मंत्र का उच्चारण करने वाला कौन था।

उनके और नजदीक पहुंचने पर मकरंद का मुख प्रसन्नता से चमक उठा। क्योंकि उनके सामने उनका प्रिय शिष्य रुद्र वृक्षासन योग मुद्रा में लीन होकर महाशक्तिशाली महामृत्युंजय मंत्र का जाप कर रहा था। जमीन से कुछ दो हाथ ऊपर उठे एक समतल पाषाणशिला पर एक पैर पर खड़े होकर योग साधना में लीन था।

मकरंद ने रुद्र की इस योग साधना में विघ्न ना डालते हुए, आहिस्ते से उसके नजदीक ही रखें एक बड़े पत्थर पर बैठकर उन सुंदर और प्रभावशाली शब्दों का रसपान करने लगे। यह दृश्य काफी देर तक चलता रहा। मकरंद उन ताकतवर मंत्रों का आनंद लेते हुए स्वयं ध्यनामग्न हो गए थे। उन्होंने अपनी आंखें बंद कर ली और उस आनंद में डूब गए। उन शक्तिशाली मंत्रों के उच्चारण से वहां हो रहे कंपन को वे महसूस कर पा रहे थे। उनकी आंखें तब खुली जब उन्हें अपने चरणों में किसी का स्पर्श महसूस हुआ। मकरंद उठ खड़े हुए। उन्होंने रूद्र को अपने गले से लगाया और उसकी बेहद खूबसूरत वाणी की प्रशंसा 'नीति शतकम् भर्तृहरिविरचितम्' के इस श्लोक के माध्यम से की-

" केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्धजाः ।
वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ।।"

(अर्थात बाजूबन्द, चन्द्रमा के समान मोतियों के हार, स्नान, चन्दनादि के लेपन, फूलों के श्रृंगार और सँवारे हुए, बालों से पुरुष की शोभा नहीं होती; पुरुष की शोभा केवल संस्कार की हुई वाणी से है; क्योंकि और सब भूषण निश्चय ही नष्ट हो जाते है, किन्तु वाणी- रुपी भूषण सदा वर्तमान रहता है।)

रुद्र के मुख पर एक अभूतपूर्व खुशी थी। उसने एकदम सौम्य भाव से अपने दोनों हाथ जोड़ें और मकरंद से कहा-

"गुरुजी! यह सब आप की ही देन है। यह जीवन, यह वाणी, क्षमता और साहस सब आप से ही मिला है।

यादृशैः सन्निविशते यादृशांश्चोपसेवते ।
यादृगिच्छेच्च भवितुं तादृग्भवति पूरूषः ॥"

(अर्थात मनुष्य, जिस प्रकार के लोगों के साथ रहता है, जिस प्रकार के लोगों की सेवा करता है , जिनके जैसा बनने की इच्छा करता है, वैसा वह होता है)

मकरंद ने अपने दोनों हाथ रुद्र के कंधे पर रखें और कहा- "तुम मेरी प्रशंसा कर रहे हो, यह तुम्हारी सौम्यता और संस्कार है। जो तुम्हें मुझ से नहीं अपितु तुम्हें तुम्हारे परिवार से मिली है।"

"गुरुवर, आप किस परिवार की बात कर रहे हैं। मैं तो आप और मेरे इन साधु साथियों के अतिरिक्त शायद ही किसी को जानता हूं।"

"नहीं रुद्र, नहीं! मैं तुम्हारे उस परिवार की बात कर रहा हूं जिसमें जन्म व पालन पोषण करने वाली मां, तुम्हारे बचपन के मित्र और कई सहयोगी है।" मकरंद ने वापस शिला पर बैठेते हुए कहा।

"गुरुजी! आपने कई बार मेरी मां और परिवार के बारे में बात करी है। पर आप कभी भी पूरी तरह से मुझे बता नहीं पाते कि वो कौन है? मैं कौन हूं और मेरी वास्तविकता क्या है? पर मैं यह अच्छी तरह समझता हूं कि आप मेरे बारे में प्रत्येक चीज चाहे वह मेरा भूतकाल हो या भविष्य से अभिज्ञ है। फिर भी आप मेरा, मुझसे ही परिचय क्यों नहीं करवाते?"

मकरंद मुस्कुराए, उन्होंने रुद्र का हाथ पकड़कर उसे अपने पास में बैठाया और कहा "रूद्र ! भाग्य के लिखे लेख कभी नहीं बदलते। समय से पहले और भाग्य से ज्यादा न कभी किसी को मिलता है और ना ही मिलेगा। पर भाग्य कर्म का फल होता है। भाग्य या दुर्भाग्य अपना प्रभाव बिल्कुल समय पर पूरी मात्रा में देते है। और ईश्वर के हर कार्य के पीछे एक उद्देश्य होता है। तुम यह जान लो हो कि तुम्हारे यहां होने का भी एक उद्देश्य ही है। और सही समय आने पर यह उजागर भी होगा। तब तक के लिए तुम्हें प्रतीक्षा ही करनी होगी।"

"पर गुरुजी जी, आप मुझे इतना तो बता ही सकते हैं कि क्या मुझे मेरी मां और परिवार वापस मिलेगा? क्या मैं उन्हें पहचान पाऊंगा? क्या मैं स्वयं को पहचान पाऊंगा?" रूद्र अधीर था।

"तुम उनसे अवश्य ही मिलोगे। और तुम्हें उन्हें तथा अपने आपको भी पहचान पाओगे। बस याद रखो कि तुम्हारा यहां होना भी ईश्वर का एक उद्देश्य ही है। और सबसे अधिक महत्व वाली बात यह है कि तुम्हारा रूप बदला है, वस्त्र बदले हैं पर तुम्हारा कर्म क्षेत्र अभी भी वही है।"

"और वो क्या है, गुरुजी?" रुद्र ने उत्साहित होकर पूछा।

"तुम इस युग में एक क्षत्रिय की तरह हो। जिस प्रकार एक क्षत्रिय देश, राजा और नागरिकों की रक्षा करता है, उसी प्रकार इस जन्म में तुम्हारा कर्म भी कुछ ऐसा ही है। तुम एक अप्रत्याशित योद्धा हो। प्रकृति और नियति ने तुम्हारी कर्म स्थली बदली है, कर्म नहीं।"

"अर्थात, आप यह कहना चाहते हैं की मैं कोई पुलिस अधिकारी या सैनिक था।" शेखर ने अपनी आंखें फैलाते हुए कहा।

"रुद्र तुम बिल्कुल भी अधीर ना हो। मुझ पर विश्वास रखो। तुम्हारे सारे प्रश्नों और संशयों का उत्तर जल्दी ही तुम्हारे समक्ष होगा।" कहकर मकरंद उठ खड़े हुए और अपने एसआई आश्रम की तरफ चल पड़े। शेखर ने भी उनका अनुगमन किया।

"आप ठीक ही कह रहे है, गुरुवर। और आप पर विश्वास ना करने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। क्योंकि मैं जानता हूं-

देवो रुष्टे गुरुस्त्राता गुरो रुष्टे न कश्चन: ।
गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता न संशयः।।

(अर्थात भाग्य रूठ जाए तो गुरु रक्षा करता है, पर गुरु रूठ जाए तो कोई नहीं होता। गुरु ही रक्षक है, गुरु ही रक्षक है, गुरु ही रक्षक है, इसमें कोई संदेह नहीं है।*)*

"निसंदेह तुम अत्यंत ही बुद्धिमान हो। मेरे हजारों शिष्यों में तुम श्रेष्ठतम हो। तुम अपनी मधुर और सौम्य वाणी से किसी को भी प्रभावित कर सकते हो। शारीरिक दक्षता में हमारा किसी से मुकाबला नहीं है। शास्त्रों में अत्यंत ही कम समय में निपुणता प्राप्त की है। फिर भी मैं तुम्हें यह कहना चाहूंगा की-

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा, सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ, प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ।।

(यानी विपत्ति में धीरज, अपनी वृद्धि में क्षमा, सभा में वाणी की चतुराई, युद्ध में पराक्रम, यश में इच्छा, शास्त्र में व्यसन - ये छः गुण महान और वीर लोगों में स्वभाव से ही सिद्ध होते हैं । ऐसे गुण स्वभाव से ही, जिन में हो, उन को महात्मा जानो । इससे जो महात्मा बनना चाहे वह ऐसे गुणों के सेवन के लिए अत्यंत उद्योग करे।*)*

"इसीलिए तुम अपने भूतकाल और भविष्य की चिंता तो बिल्कुल ही छोड़ दो। समय आने पर यह दोनों तुम्हारे सामने होंगे। इस समय तुम केवल वर्तमान की ही बात करो। और तुम्हारा वर्तमान इस समय तुम्हें प्रयागराज बुला रहा है।" मकरंद ने मुस्कुराकर रूद्र से कहा।

"प्रयागराज ? गुरु जी क्या वाकई में हम कुंभ मेले में जा रहे हैं? यह तो कमाल हो जाएगा! मैं वहां जाने के लिए बहुत उत्साहित हूं।" रूद्र ने खुशी से उछलते हुए कहा।

"मैं भी तुम्हें वहां ले जाने के लिए बहुत उत्साहित हूं….!" मकरंद ने किसी रहस्य को छुपाते हुए मुस्कुरा कर कहा।

………..to be continued